आरएनएन. पंजीयन क्रमांक
CHHIN/2017/72506

वर्ष 04, अंक 10 नवंबर 2020

किलोल

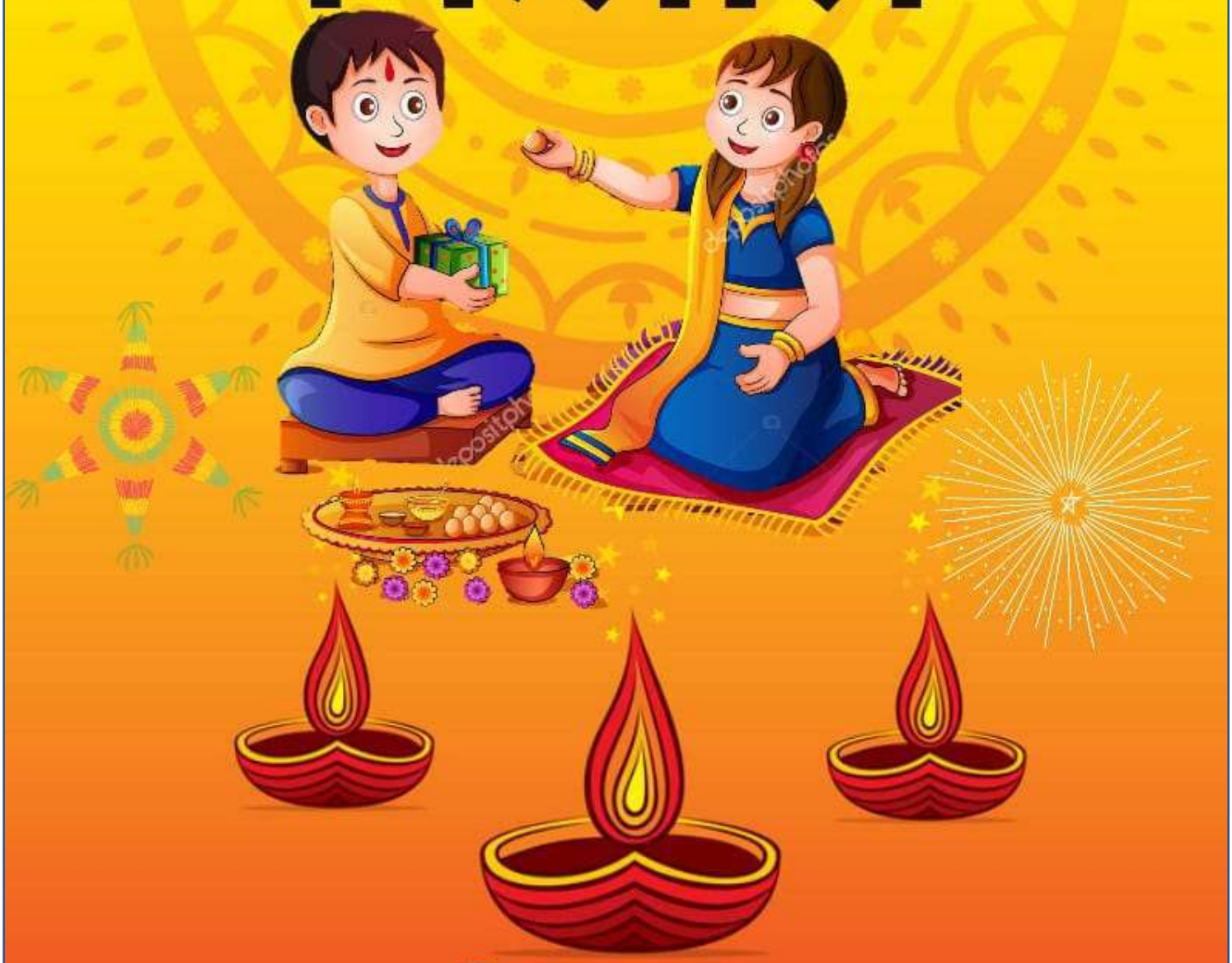

happy diwali

http://www.kilol.co.in

मूल्य 80/-

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

H. No. 580/1 Street 17 B Durga Chowk,
Adarsh Nagar, Mowa Raipur (CG) 492007
email : wings2flysociety@gmail.com

अनुक्रमाणिका

ड्रोन कैम 5

मामा के घर 7

हमारा शासकीय विद्यालय 8

पंचतंत्र की कथाएँ- खरगोश और शेर 10

दीपावली 12

श्यामपट्ट 13

तितली रानी 15

हँसिया 16

जनगणना 17

मूँगफली 18

अटल खड़े पेड़ 19

चिट्ठी पतरी 20

मेरी टीचर 22

अधूरी कहानी पूरी करो 24

बारिश का वह दिन 24

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गयी कहानी 25

समस्या समाधान 25

टेकराम ध्रुव ' दिनेश' द्वारा पूरी की गयी कहानी 26

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गयी कहानी 27

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 28

किताब 28

भोर 30

जलेबी 32

बापू 34

रक्सापथरा 35

हम बच्चे प्यारे-प्यारे 36

शरद ऋतु 37

चले तोड़ने सीताफल 38

सुबोध का सपना 40
स्कूल 42
माँ मुझे स्लेट और बत्ती दे दो 44
औघड़ दानी 46
मेरी बेटियाँ 47
हमारे पौराणिक पात्र- महर्षि वाल्मीकि 49
समय बहुत बलवान 51
नमन 53
क्यों? 55
देवारी के तिहार 57
एक नन्हा सा भालू 58
मुर्गा बाँग लगाता है 60
एकता का राज 62
शर्त 63
पढ़ई तुहर दुआर 65
वर्षा ऋतु प्यारी है 66
हमारे प्रेरणास्रोत- देशबंधु चित्तरंजन दास 67
नदी हूँ नदी हूँ 69
मेरे गाँव की शाम 71
रिश्तों का मोल 73
शिक्षा 74
पढ़ई तुहर दुआर 76
नवरात्रि 78
बेटियाँ 79
सफलता की कहानी- फगनी का छात्रावास में नया जीवन 80
नदियाँ 83
सबसे ताकतवर 84
कोहिनूर की आभा (महात्मा गाँधी) 86
नटखट नन्ही 87
अफ्रिका में कुली बैरिस्टर गांधी 89

मनु बंदर....90
बापू की सीख....91
नई इबारत लिख जाना....93
दीपावली मनाने की परंपरा....94
छोटा-सा है मेरा परिवार....96
घोंदू और जंपी....97
इंतजार....100
वसुधा है परिवार....101
माता बहादुर कलारिन....102
पटाखों की दीवाली....107
रक्तदान....109
दीप जलाना दीवाली में....111
पढ़ई के मतलब परीछा नो हे....112
बापू के बन्दर....114
पढ़ई तुँहर द्वार हे....115
पढ़ई तुँहर द्वार हे....115
अधरों पर मुस्कान खिली....116
चित्र देख कर कहानी लिखो....118
यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी....119
शेर की सीख....119
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी....120
चूहा बना राजकुमार....120
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र....122
भाखा जनऊला....123

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, कंचन लता यादव, पुर्णेश डडसेना, कविता आचार्य

ई-पत्रिका

पुनीत मंगल

आवरण पृष्ठ

हेमंत साहू

प्यारे बच्चो,

आशा है आपको किलोल पढ़ने में मजा आ रहा होगा.आपके शिक्षक किलोल के लिए अपनी रचनाएँ भेजते हैं. हम चाहते हैं कि आप भी अपनी कुछ रचनाएँ किलोल के लिए भेजें.हमें आपकी रचनाओं को प्रकाशित करना अच्छा लगेगा.

लॉकडाउन के दौरान आपकी पढ़ाई जारी है या नहीं. ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों प्रकार की सुविधाएँ आपको उपलब्ध हो रही होंगी. सीखना-सिखाना बिलकुल बंद न करें. स्कूल खुलने की प्रतीक्षा करें. कोरोना वायरस का खतरा अभी बना हुआ है, इसलिए अपनी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखें. आपको तीन चीजों का पूरी तरह से पालन करना चाहिए.अपना चेहरा मास्क या गमछे से ढँकना, हाथों को साबुन से निरंतर साफ़ करना एवं दो गज की दूरी का पालन आवश्यक है.

किलोल का एक वर्ष पूरा हो रहा है अगले वर्ष के लिए अपना सब्सक्रिप्शन यूथ क्लब के माध्यम से लेना ना भूलें.

आपका
आलोक शुक्ला

ड्रोन कैम

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

चौकीदार नया भाया है.
ड्रोन कैम घर में आया है.

सीसीटीवी से भी उत्तम
सजग सुरक्षा में रत हरदम
बाहर कहीं घूमने जाएँ
चिंता - भय अब नहीं सताएँ

कोना-कोना नजर में उसकी
चोर न घर में घुस पाया है.

ड्रोन कैमरे की निगरानी
मोबाइल से जुड़ी कहानी
बिजली-इंटेरनेट क्या करना
इसके एप को चालू रखना

कृत्रिम बुद्धि कैमरा रखता
'खिड़की खुली है' बतलाया है.

घर में सुनकर कहीं भी खटपट
ड्यूटी पर वह निकले झटपट
आपको संदेशा पहुँचाए
सारी लाइव फुटेज दिखाए

काम नहीं होता जब कोई
डिवाइस बॉक्स में सुस्ताया है.
ड्रोन कैम घर में आया है.

मामा के घर

रचनाकार- द्रोण कुमार सार्वा

अबकी बार गर्मियों में हम
फिर जाएंगे मामा के घर
मुन्ना, मुन्नी, बब्बू, डब्बू
मिल जाएंगे मामा के घर
लुका-छिपी, भौरा-बिल्लस
खेल रचाएंगे मामा के घर
नानी के मुंह रोज कहानी
सुन पाएंगे मामा के घर
सैर सपाटे नाना के संग
उधम मचाएंगे मामा के घर
मन में कितने भाव समेटे
सच कर पाएंगे मामा के घर
घर से दूर भी अपनो के संग
जुड़ जाएंगे मामा के घर...

हमारा शासकीय विद्यालय

रचनाकार- विष्णुगिरि गोस्वामी

कितना सुंदर बना हमारा,
शासकीय विद्यालय प्यारा है.
छात्र-छात्राएँ आते-जाते देखो,
पढ़ाई सबसे न्यारी है..

विद्यालय के मैदान में देखो,
विद्यार्थी दौड़ लगाते हैं.
विद्या अध्ययन कर विद्यार्थी,
जीवन में खूब आगे जाते हैं.

छात्र-छात्राएँ यहाँ पर देखो,
ख़ूब मेहनत करते हैं.
कोई शिक्षक पढ़ाते-लिखाते,
कोई चेक उन्हें करते हैं.

अपने-अपने कामों में ये,
हरदम तत्पर रहते हैं.
ठीक समय पर उचित रीति से,
काम यहाँ के होते हैं..

बहुत काम का यह विद्यालय,
लाभ अधिक इसमें भाई.
विद्यार्थियों का ज्ञान बढ़ाता,
यह है हमको सुखदाई.

आओ,प्रण लें हम सब मिलकर,
विद्यालय को सजाना है.
बेटे हो या बेटियाँ,
सबको खूब पढ़ाना है.
सबको खूब पढ़ाना है..

पंचतंत्र की कथाएँ- खरगोश और शेर

एक जंगल में एक शेर रहता था. वह बड़ा बलवान था. जब उसे भूख लगती, वह जंगल में निकलता और जो भी जानवर दिखाई पड़ता उसे मार डालता. उसे अपनी भूख मिटाने के लिए एक ही जानवर का शिकार करना पर्याप्त था किंतु वह अपने बल के घमंड के कारण जितने प्राणी चाहता उतने मार डालता था.

इस बात से जंगल के सभी सभी जीव - जंतु बहुत भयभीत और दुखी थे. एक दिन सभी ने मिलकर यह विचार किया कि हमें शेर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह ऐसा ना करे. ऐसा निश्चित कर वे सभी उस शेर के पास पहुंचे. जैसे ही शेर ने उन्हें देखा, बड़ी जोर से गरजा और कहा, तुम सब यहां क्यों आए हो?

तब एक बूढ़े सियार ने कहा, महाराज! आप हमारे राजा हैं, और हम सब जंगल के प्राणी आपकी प्रजा हैं. हम आपसे प्रार्थना करने आए हैं कि आप जिस तरह से हम प्राणियों का वध कर रहे हैं उससे वह दिन बहुत जल्दी आएगा जब जंगल में आपके सिवा कोई ना बचेगा. और जब प्रजा ही नहीं होगी तो फिर आप राजा कैसे रहेंगे. फिर आपके खाने के लिए कोई प्राणी भी ना बचेगा.

हम आपसे यह प्रार्थना करने आए हैं कि हम प्रतिदिन आपकी गुफा के पास एक जानवर भेज दिया करेंगे. आप उसे खा कर संतुष्ट हो जाएंगे. तब शेर ने सोचा कि इनकी बात सही है. उसने सियार का प्रस्ताव मान लिया.

उस दिन से प्रतिदिन एक जानवर शेर के पास जाता और शेर उसे खाकर अपनी भूख मिटा लेता. अब जंगल में शांति थी.

एक दिन एक नन्हे खरगोश की बारी आई. खरगोश था तो बहुत छोटा किंतु बहुत बुद्धिमान था. उसने सोचा किसी युक्ति से इस शेर के आतंक से जंगल के सभी प्राणियों को मुक्ति दिलाई जाए.

वह बहुत धीरे - धीरे चलते हुए शेर के पास पहुंचा. शेर का भूख से बुरा हाल था. उसने खरगोश को देखते ही दहाड़ कर पूछा, इतनी देर क्यों लगा दी? यदि तुम लोगों ने ऐसा ही किया तो मैं जंगल के सारे जानवरों को मार डालूंगा.

तब खरगोश ने बहुत ही विनम्र होकर कहा, महाराज मुझे क्षमा करें. मैं जब आपके पास आ रहा था तो रास्ते में मुझे एक दूसरे शेर ने रोक लिया. मैंने उससे बड़ी विनती की और बताया कि मैं अपने राजा के पास जा रहा हूं तो उसने मुझे डांट कर कहा, अब इस जंगल का राजा मैं हूं. जाकर तुम उससे कह दो.

महाराज! मैं आपको यही बताने आया हूं. यदि आपने उसे बिना कोई दंड दिए छोड़ दिया तो वह किसी भी प्राणी को आप तक आने नहीं देगा. ऐसा सुनते ही शेर क्रोध से भर उठा. उसने खरगोश से कहा, चलो बताओ, वह कहां है. मैं अभी उसका काम - तमाम करता हूं. खरगोश शेर को एक कुएं के पास लाया और कहा, महाराज! उस शेर ने मुझे यहीं पर रोका था. हो सकता है आपको देखकर वह इस कुएं में छुप गया हो.

ऐसा सुनते ही शेर ने कुएं में झांक कर देखा. उसे अपनी ही परछाई दिखी. परछाई को ही उसने दूसरा शेर समझ लिया और जोर से दहाड़ा. कुएं के अंदर से उसे अपनी ही आवाज की गूंज सुनाई पड़ी. क्रोध में पागल हुए शेर ने आव देखा ना ताव और कुएं में कूद पड़ा. फिर वह कभी बाहर न निकल सका और मर गया.

खरगोश ने जाकर सारी बातें सभी जानवरों को बताई. सब बहुत आनंदित हुए.

इस तरह एक छोटे से खरगोश ने अपने से कई गुना शक्तिशाली शेर को अपने बुद्धि के बल से समाप्त कर दिया.

दीपावली

रचनाकार- टेकराम ध्रुव 'दिनेश'

टिम -टिम करते दीप धरा में,
लगते कितने प्यारे.
ऐसा लगता आसमान से,
उतर पड़े सब तारे..
दीपों का यह पर्व दीवाली,
लगती कितनी प्यारी.
धम-धमा-धम की लय से,
गूँजे वसुधा सारी..
बच्चों की ये धमा-चौकड़ी,
कितनी खुशियाँ देती है.
घर की सारी नीरवता को,
पल में ही हर लेती है..
आओ, हम सब मिलकर जग में,
प्यार के दीप जलाएँ.
घृणा-द्वेष के भाव को जलते,
दीपों में जला जाएँ..

श्यामपट्ट

रचनाकार- सपना यदु

देखो-देखो प्यारे बच्चों मैं हूँ तुम्हारा मित्र सखा.
मैंने तो तुम्हें है सदा, ज्ञान की बातें दी है सीखा..

मेरे रूप हैं अनेक, मैं हूँ काला, हरा, सफेद.
सब बच्चे हैं एक समान, नहीं किसी मे कोई भेद..

अ आ इ ई, १ २ ३ और मैं सिखाऊं A B C.
जैसे ही घंटी बजती है, फिर हो जाती मेरी छुट्टी..

सबका मूँह है मेरी ओर, सबका ध्यान मुझ पर है होता.
तुम्हारे काम आऊं, सोचकर गर्व मुझको है होता..

लिख -लिख कर जब हो जाती हूँ, देखो बच्चों में पुरानी.
फिर मुझ को सुंदर बनाने, रंग चढ जाती मुझ पर सुहानी..

मम्मी, पापा, दादा, दादी और मुझे जानते हैं तुम्हारे नाना नानी.
है मेरा सबसे पुराना नाता, अब आ गई है तुम्हारी बारी..

मैं तुम्हारा सच्चा दोस्त, मुझ पर करते रहना भरोसा.
गुरु के प्रिय रहोगे सदा, जीवन पथ में आगे बढ़ोगे हमेशा..

तितली रानी

रचनाकार- लक्ष्मी सोनी

रंग बिरंगी न्यारी-न्यारी,
मेरी प्यारी तितली रानी.

इधर-उधर वह उड़ती रहती,
करती रहती है मनमानी.

मन करता है इनको छू लूँ,
अपने घर में इनको रख लूँ.

पास बिठा के इन्हें खिलाऊँ,
इनकी दुनिया में रँग जाऊँ.

हँसिया

रचनाकार- नेमेन्द्र कुमार गजेन्द्र

महामारी संकट मा संगी थम गए देस महान,
शिक्षा फिर घर-घर उतरिस नेटवर्किंग हे बलवान!

खेल-खेल में पढ़ई लिखई अब दुआर दुआर हे उतरिस,
ध्रुवतारा कस उतरिन शिक्षक चमचम गाँव घर चमकिस

नवा नवा शिक्षा अभियान ला करके सब अभिनन्दन,
स्वीकारिन नोनी बाबु सब ऑन लाइन के बंधन

आ जाए अब कोनो संकट आगू बढ़ के दिखाना हे,
लक्ष्य बेध ला साध के संगी देस ला अब जिताना हे!

लहलहाही जम्मो बारी अब घर-घर दीप जलाना हे,
नवा जुग मा छउवा मन ला नवाचार सिखलाना है!

जनगणना

रचनाकार- विक्रम 'अपना'

जंगल में जनगणना जारी थी.
हैट लगाए चींटीं रजिस्टर लेकर बंदर से प्रश्न पूछ रही थी.
हाथी- एक भी नहीं
जेब्रा- एक भी नहीं
घोड़ा- एक भी नहीं
शेर - एक भी नहीं
बंदर- मैं अकेला ही हूँ. इस जंगल में.
जंगल के मायने बदल चुके थे. चार पेड़ के झुरमुट को अब जंगल कहा जाता था.
यह नज़ारा सन 3001 का था.
अब लगभग सारे जानवरों की प्रजातियां विलुप्त हो चुकी थीं.
केवल एक ही प्राणी चारों और व्याप्त था वह था आदमी.

मूँगफली

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह "नीहार"

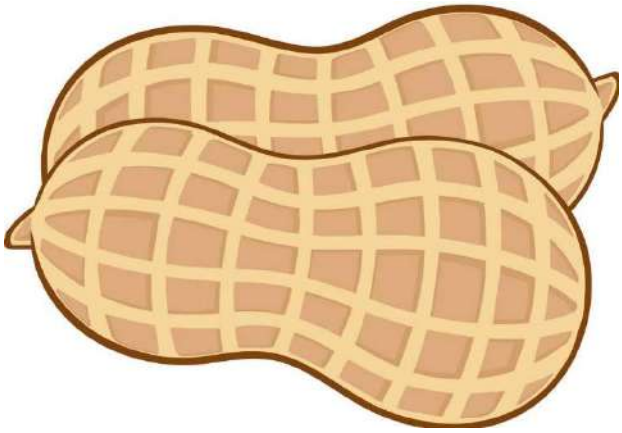

जाड़े का मौसम आते ही,
बिकने लगती गली - गली.
सारे फल लगते पेड़ों पर,
जड़ में आती मूँगफली.
बड़े चाव से खाते सारे,
बच्चों के मन को भाती.
सर्दी में गर्मी पहुँचाए,
रही गरीबों की साथी.
दाँत बिना दादी - दादा को,
रही दूर से ललचाती.
अम्मा गाजर के हलुआ में,
पीस - पीसकर डलवाती.
कभी शाम को लेकर बैठें,
संग मे अपने मूँगफली.
बात बनाते खाते - खाते,
छिलकों की बारात चली..

अटल खड़े पेड़

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

अटल खड़े हैं पेड़ सारे,
अटल खड़े हैं पेड़ सारे,
बहुत सुंदर प्यारे-प्यारे.
यह देते हैं हमको फल- फूल
और देते हैं छांव,
देते हैं हमको जड़ी -बुटियाँ
और देते इमारती लकड़ियाँ
देते पेड़ हमको शुद्ध हवा
और देते हैं वर्षा पानी
अटल खड़े हैं पेड़ सारे.
सोच रहे हैं हम भी घूमेंगे,
इधर-उधर टहलेंगे,
मगर है ये सदियों का सच
पेड़ के पांव कहाँ होते हैं
पेड़ कहाँ चल पाते हैं
पेड़ खड़े हैं अपनी ठाँव
ये तो देते हैं हमको छाँव
अटल खड़े हैं पेड़ सारे
बहुत सुंदर प्यारे-प्यारे.
बहुत सुंदर प्यारे- प्यारे.

चिट्ठी पतरी

रचनाकार- नेमेन्द्र कुमार गजेन्द्र

चिट्ठी पतरी हर बने, सपना जइसे बात.
लिखे रहे जेमा कभू, मन भर के जज्बात..

कल जुग मा कल कल करत, मोबाइल अउ मेल.
रिश्ता नाता हर लगे, बनगे जइसे खेल..

महक धरा वो गाँव के, चिट्ठी लाने संग.
पढ़ के मन अइसे लगे, भीजे जइसे अंग..

आजी आजा के मया, छलके नदिया धार.
चिट्ठी के हर डाँर मा, कूट भरे वो प्यार..

सबो गोठ सपना असन, भूलत अब के लोग.
ये कल जुग हर आज के, जउँहर बनगे रोग..

हलो हाय के गोठ हर, अब के निक व्यवहार.
पाती के जय राम का, अब बनगे बेकार..

लोगन कर नइ हे समय, जिनगी भागम भाग.
दया मया पाती सबो, लगगे हावय आग..

मेरी टीचर

रचनाकार- प्रियंका सिंह

मेरी टीचर सबसे सुंदर, सबसे न्यारी,
बातें करती हैं वो प्यारी प्यारी.

मुझको रोज पढ़ाती हैं,
साथ हमारे शक्कर सी घुल जाती हैं.

संग हमारे गाना गाती,
जब वो पाठ पढ़ाती हैं.

बड़े प्यार से समझाती हैं,
रोज नई-नई बातें बताती हैं.

प्रेम से रहना सिखाती हैं,
बड़ों का आदर कराती हैं.

ये सब शिष्टाचार की बातें हमें बताती हैं,
मुझको रोज पढ़ाती हैं.

कभी गलतियां नहीं गिनाती हैं,
खूब- लाड़ लड़ाती हैं.

फूलों सी मुस्काती हैं,
हमारी प्यारी परी भी बन जाती हैं.

बिना जादू की छड़ी के जादू दिखलाती है,
अनुशासन की हैं वो बिल्कुल पक्की.

रोज समय पर शाला आ जाती हैं,
हम सबकी सच्ची दोस्त बन जाती हैं.

हमारी हर समस्या सुलझाती हैं,
साथ हमारे खूब खेलती, हमको खूब हंसाती हैं.

हमें खेल खेल में पढ़ाती हैं,
नए नए खिलौने रोज दिलाती हैं.

ना जाने कितना प्यार जताती हैं,
हम सब के लिए नन्ही सी बच्ची भी बन जाती हैं.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

बारिश का वह दिन

परसा टोली तीस - चालीस घरों की एक छोटी सी जंगली बस्ती थी जो एक टेकरी के ऊपर बसी थी. यहां के लोग जंगल की उपज इकट्ठी करते और थोड़ी फल - सब्जियां उगाते थे. परसा टोली के सबसे पास का गांव था कुंवरपुर. आसपास की सभी बस्तियों और टोलों के लोग जरूरत की चीजें यहीं से खरीदकर ले जाते थे. यहां एक छोटा सा अस्पताल, पोस्ट ऑफिस और एक हाई स्कूल भी था. स्कूल के सभी शिक्षक बहुत परिश्रमी और अपने काम के प्रति बहुत जागरूक थे.स्कूल के सभी बच्चे अपने इन शिक्षकों को बहुत चाहते थे और उनका सम्मान करते थे. यही कारण था कि स्कूल की उपस्थिति प्रायः शत - प्रतिशत रहती थी.

परसा टोली के लगभग पन्द्रह - सोलह बच्चे भी यहीं पढ़ने आते थे. परसा टोली और कुंवरपुर के बीच एक नाला पड़ता था. इसमें साल भर घुटनों तक पानी रहता ही था. एक बार दो दिनों तक लगातार बारिश होती रही. पहले दिन तो बच्चों ने किसी तरह नाला पार कर लिया. दूसरे दिन नाले में पानी कुछ ज्यादा बढ़ गया. जो बच्चे कुछ बड़े थे उन्होंने छोटे बच्चों को वापस घर भेज दिया और खुद तैर कर नाले को पार कर लिया. जब वे स्कूल पहुंचे तो गीले कपड़ों में उन्हें देखकर शिक्षकों ने समझाया कि ऐसी कठिन स्थितियों में वे स्कूल ना आया करें.

छुट्टी होने के बाद ये बच्चे जब घर लौट रहे थे, नाला उफान पर था. उसे देखकर बच्चों की हिम्मत जवाब दे गई. शाम हो चली थी. आसमान में घनी बदलियां छाई हुई थीं. धीरे-धीरे अंधेरा गहराने लगा था. बच्चे फंस चुके थे. वे वापस कुंवरपुर भी नहीं जा सकते थे और उफनते नाले को पार करना भी खतरे से खाली नहीं था.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गयी कहानी

समस्या समाधान

नाले के पास बैठकर सभी बच्चे सोच रहे थे कि इस उफनते नाले को कैसे पार किया जाए? कुछ देर पश्चात शिक्षकों को सूचना प्राप्त हुई कि बच्चे नदी के पास बैठे हुए हैं. अत्यधिक बाढ़ के कारण बच्चे नदी पार नहीं कर सकते. सूचना प्राप्त होते ही शिक्षक गाँव के मुखिया के साथ नाले के पास बैठे बच्चों के पास पहुँचकर,बच्चों को समझाने लगे कि इस तरह बाढ़ की स्थिति में नदी पार करने से दुर्घटना हो सकती है. इस तरह नदी में बाढ़ हो तो वापस स्कूल आकर शिक्षकों को सूचना देना चाहिए.

शिक्षक सभी बच्चों को वापस स्कूल ले गए. गाँव के मुखिया एवं शिक्षकों के सहयोग से सभी बच्चों के लिए खाने और सोने की व्यवस्था कर दी गई. साथ ही बच्चों के पालकों को भी सूचना भेज दी गई कि बच्चे स्कूल में ही सुरक्षित हैं. नदी में बाढ़ आ जाने के कारण घर नहीं आ सकते,सूचना पाकर पालक निश्चिंत हो गए.

मुखिया के मन में विचार आया कि इस समस्या का समाधान करने का कोई उपाय करना चाहिए. यह सोचकर दोनों गाँव के पालकों एवं जन समुदाय की बैठक आयोजित की गई. बैठक में चर्चा हुई कि दोनों गाँवों के बीच आवागमन के लिए आपसी सहयोग से नदी पर पुल का निर्माण करना चाहिए ताकि हमारा कार्य सुचारू रूप से चले. शिक्षकों और गाँव के मुखिया ने स्थानीय विधायक को इस समस्या की जानकारी दी. विधायक महोदय ने समस्या का हल करने का पूरा प्रयास करने का आश्वासन दिया. शासन एवं गाँव के लोगों के सहयोग से नदी पर पुल का निर्माण हो गया. अब दोनों गाँव के लोगों की समस्या का हल हो गया है.

टेकराम ध्रुव ' दिनेश' द्वारा पूरी की गयी कहानी

बच्चे नाले का उफान देखकर सोच में पड़ गए कि अब क्या करें? तैरकर नाला पार करना खतरे से खाली नहीं है. नाले का जलस्तर जल्दी कम होने वाला नहीं है. यहाँ इंतजार करने से बेहतर है कि हम वापस कुंवरपुर अपने शिक्षक के यहाँ चलते हैं. वहाँ कुछ न कुछ इंतजाम हो जाएगा.

बच्चों ने कुंवरपुर अपने शिक्षक के यहाँ पहुँच कर सारी बात बताई. शिक्षकों ने कहा - बहुत अच्छा किया बच्चो जो नाला पार न करके वापस आ गए. तुम लोगों को चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है. जब तक नाला पार करने लायक नहीं हो जाता,तब तक तुम लोगों के रहने की व्यवस्था कर देते है. स्कूल के एक कमरे में बच्चों के रहने और खाने की व्यवस्था कर दी गई. और परसा टोली में बच्चों के माता-पिता तक यह संदेश पहुँचा दिया गया कि वे लोग परेशान न हों, उनके बच्चे सकुशल है.

दो दिन तक नाला उफान पर रहा और बच्चे अपने घर परसा टोली नहीं पहुँच पाए. कुंवरपुर में उनके रहने और खाने की व्यवस्था हो गई थी इसलिए वे परेशान नहीं थे. लेकिन ऐसा कब तक चलेगा? यह सोचकर बच्चे चिंतित थे. बच्चे सोचते रहे कि यदि नाले पर पुल बन गया होता, तो ऐसा दिन देखना नहीं पड़ता.

उधर परसा टोली में भी बच्चों के माता-पिता बैठक में इसी बारे में बातचीत कर रहे थे. आज तक नाले में इतना उफान कभी नहीं आया था कि पार करने में परेशानी हो. लेकिन इस बार के उफान ने हमें सचेत कर दिया है कि अब हम इस नाले पर पुल का निर्माण करें.

अगले दिन नाले का जलस्तर कम हुआ तो बच्चे अपने- अपने घर सकुशल पहुँचे. परसा टोली और कुंवरपुर के लोग आपसी जन सहयोग से नाले के ऊपर पुल निर्माण के कार्य में जुट गए.

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गयी कहानी

परसा टोली के बच्चे वाकई मुसीबत में फँस चुके थे और दुविधा में थे पर उनका साहस अभी भी उनके साथ था. उनके परिवारजनों को भी डर सता रहा था पर वे करें भी क्या? रात हो चली थी और नाला उफान पर था. बच्चों ने इस उफनते नाले को तुरंत पार करना मुनासिब नहीं समझा और धैर्य दिखाया. साँप आदि के डर से चुपचाप रात बिताने की सोची और सुबह नाला पार करने की एक तरकीब सोची. आखिर वे पहाडी निवासी थे और उन्हें लकड़ी का उपयोग अच्छी तरह आता था. उन्हें पता था कि पुरानी सूखी लकडियाँ उनके लिए नाव का काम करेंगी,सुबह नाले का उफान कम होने पर बच्चों ने आसपास पड़ी लकड़ियों को इकट्ठा किया और सबने लकड़ियों के सहारे नाले में छलाँग लगा दी. सभी ने मिलकर लकडियों को रस्सी से अच्छी तरह से बाँध दिया था ताकि कोई ज्यादा दूर तक ना बह पाए. लकड़ियों के सहारे और तैराकी के अपने हुनर के बल पर सभी बच्चे नाला पार कर किनारे पर पहुँच गए और फिर किनारे के पेड़ के सहारे से नाले से बाहर आते गए. सब अपने-अपने घर पहुँच गए. गाँव वालों ने बच्चों को देखकर राहत की साँस ली. सबने बच्चो के साहस के लिए उन्हें शाबाशी दी.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

किताब

छुट्टी की घंटी बजी और सारे बच्चे हो - हो करते स्कूल से बाहर निकल आए. संदीप और किशोर साथ - साथ बाहर निकले. दोनों यह बात कर रहे थे कि आज गणित में गृहकार्य के जो प्रश्न दिए गए हैं उन्हें कैसे हल किया जाए.

किशोर को गणित में बहुत कठिनाई होती थी. उसने संदीप ने कहा इन सवालों को हल करने में तुम मेरी मदद करना. संदीप ने कहा जरूर करूंगा लेकिन अभी तक मेरे पास गणित की किताब नहीं है. किशोर ने कहा, कोई बात नहीं, मैं शाम को तुम्हारे घर आ जाऊंगा. दोनों मिलकर सवाल हल कर लेंगे.

घर लौटकर संदीप किशोर की प्रतीक्षा करता रहा. बहुत देर हो गई, किशोर नहीं आया. अंधेरा होने को आ गया. अब संदीप को घबराहट होने लगी. उसे लगा यदि किशोर नहीं आया तो सवाल बन नहीं पाएंगे. वह घर में नहीं बताना चाहता था कि उसके पास गणित की किताब नहीं है. उसे मालूम था कि पिताजी अभी किताबें खरीद नहीं पाएंगे. ऐसे में उन्हें परेशान करना अच्छा नहीं होगा.

उसने किशोर के घर जाने का निश्चय किया. अपनी मां को उसने बताया कि मैं और किशोर कुछ देर साथ-साथ पढ़ना चाहते हैं. मैं उसे घर जा रहा हूं.

मां ने कहा, ठीक है लेकिन जल्दी आ जाना. संदीप अपनी कॉपी और कलम लेकर दौड़ता हुआ किशोर के घर पहुंचा. गेट पर ही चौकीदार खड़ा था. वह संदीप को पहचानता नहीं था. उसने पूछा, तुम कौन हो और यहां क्यों आए हो?

संदीप ने हांफते हुए कहा कि वह किशोर के साथ ही पढ़ता है. आज दोनों को मिलकर काम करना है.

चौकीदार ने कहा, मैं अंदर से पूछ कर आता हूं. तुम यहीं रुको.

संदीप गेट पर खड़ा रहा.

चौकीदार ने लौटकर कहा कि किशोर के पिताजी ने अंदर आने से मना किया है. संदीप अवाक रह गया, कुछ कह ना सका. उसे समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करूं.

अब इसके बाद क्या हुआ होगा, इसकी आप कल्पना कीजिए और कहानी पूरी कर हमें माह की 15 तारीख तक ई मेल**kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

भोर

रचनाकार- इन्द्राणी साहू "साँची"

भोर हुई रवि आया अम्बर.
शुभ स्वर्णिम किरणों को लेकर..
तटिनी में छवि आप निहारे.
रक्तिम वर्णि रूप श्रृंगारे..

शीतल पवन चली पुरवाई.
शुभ स्वाध्याय समय ले लाई..
संचेतना विश्रांति पाकर.
प्रज्ञा प्रखर बने तब जाकर..

उपवन में कलियाँ मुस्काईं.
रंग बिरंगी तितली आई..
भ्रमर प्रीत के गीत सुनाते.
फूलों के मन को हर्षाते..

कलकल करता बहता निर्झर.
चिड़िया चहक रही पेडों पर..
मुर्गे ने भी बाँग लगाया.
जाग मुसाफिर शोर मचाया..

आलस छोड़ो अब उठ जाओ.
योगासन का लाभ उठाओ..
स्नान ध्यान कर पूजन अर्चन.
शांत चित्त हो महके जीवन..

ऐसी स्वर्णिम बेला आई.
नस नस में भरती तरुणाई..
प्रात काल मन को अति भाता.
नव ऊर्जा नव जोश जगाता..

यह समय नहीं व्यर्थ गँवाना.
नई सुबह नव कदम बढ़ाना..
कर्म मार्ग में बढ़ते जाओ.
नवल भोर का लाभ उठाओ..

जलेबी

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार, नई दिल्ली

चन्दू चाचा बेच रहे हैं,
गरमा गरम जलेबी.
एक पाव,बीस में ले लो,
मीठी मस्त जलेबी..

टेढ़ी-मेढ़ी अन्दर से है
बाहर गोलम गोल.
खाओ और घर ले जाओ,
मीठे हो जाएँ बोल..

नन्नू जी दादी से पूछे,
इनमें कैसे भरता रस.
कड़क कढ़ाई में यह दिखती,
हो जाती कैसे सरस..

नीचे भरी चासनी में यह
मनभावन हो जाती.
चन्दू बातें बहुत बनाता,
यूँ ही बिकती जाती..

बापू

रचनाकार- वीरेन्द्र कुमार साहू

बापू आपकी कथा निराली,
जीवन प्रेरणा देने वाली.
सत्य-अहिंसा अपनाया,
देश को आजाद कराया.

ज्ञानवान सत्यवान आप थे,
बहु गुणों की खान आप थे.
निर्बल का संबल आप थे,
स्वाभिमानी, धैर्यवान आप थे.

निश्छल जीवन, सीधा-सादा,
कातें सूत चरखा लिए सदा.
सब जीवों में राम दिखाया,
सदा प्रेम का पाठ पढ़ाया.

रक्सापथरा

रचनाकार- पेश्वर राम यादव

गरियाबंद जिला मुख्यालय ले रक्सेल कोती मैनपुर ले गयारह कोस के दुरिहा म वनांचल उदंती सीतानदी सेंचुरी के कोरा म बसे हावे गोना गाँव ह अउ गोना के आश्रित गाँव हरे रक्सापथरा. इंहा के पुरखा मन के कहना हावे की इहाँ रामायणकाल म रक्सा मन ह बिचरन करे. त भगवान राम ह अपन बनवास काल म रक्सा मन ल मार के ये छेत्र ल मुक्त कराय रिहिस हे. सियान मन कहिथे- रक्सा के मरे ले ओकर हाड़ा मन ह पथरा बन गिस अउ पहाड़ बन गिस जेकर पुख्ता परमान आजो ऊँहा गाँव के तीर सियार म मिलथे. जेमा पहेली बखत म पानी गिरथे त बिस्सर बिस्सर पथरामन ह महाकथे. गाँव के पहाड़ी म अब्बड़ कांदा खोदरा हावे अउ सुघ्घर जलप्रपात तको हावे जेला हमन ह रक्सापथरा जलप्रपात कहिथन. जेहा पथरा पहाड़ी ले झर-झर, झर-झर कलकलावत बोहावत हावे. इही पथरा पहाड़ी के सेती गाँव के नाँव ह रक्सापथरा पड़िस. जेला जग ह रक्सापथरा गाँव के नाँव से जानथे.

हम बच्चे प्यारे-प्यारे

रचनाकार- सपना यदु

हम बच्चे प्यारे- प्यारे हैं.
मां की आंखों के तारे हैं..

मां के हैं हम लाल.
उसकी आंखों के तारे हैं..

अगर कभी हम रूठ जाएं.
चंदा मामा को बुलाती है..

प्यारे -प्यारे गीत सुना कर.
दूध रोटी खिलाती है..

अगर कभी जब नींद सताए.
लोरी गा के सुलाती है..

अगर कभी जो हम डर जाएं.
हम को गले लगाती है..

उछल कूद करते रहते.
हम बच्चे प्यारे-प्यारे हैं..

शरद ऋतु

रचनाकार- कृष्ण कुमार ध्रुव

बारिश छट गई शरद ऋतु है आई.
ओंस की बूंदों से युक्त, ठंडी है लाई..
सभी ऋतुओं से यह आनंदित लगती है.
घने बादल कोहरा और धुंध से सजती है..
स्वच्छ आसमान नीले दिखाई है देता.
मनु ठंडी दूर करने दिनभर धूप है लेता..
अमरूद, पपीता, संतरा, चीकू अनेक मिलते फल.
सेवन करके उत्तम स्वास्थ्य और मिलता है बल..
पृथ्वी सूर्य से दूरी पर चक्कर लगाती है.
ऋतुएं बदल कर कड़ाके की ठंडी छा जाती है..
पर्वत पहाड़ियों की प्राकृतिक छटा होती है निराली.
बर्फ चादर ओढ़े धरा देख नयन है मतवाली..
सूर्य की लालिमा किरणें ओंस दिखे मानो रंगबिरंगे फूल.
वातावरण को मिला नया रूप पृथक हुए हवा से धूल..
किसान गेंहूँ,चना फसलों को देते नया जीवन.
शरद ऋतु दशहरे, दिवाली से है अद्भुत पावन..
विटामिन से भरपूर हरी सब्जियों की होती है अधिकता.
बैगन, गोभी, धनिया, मूली, लौकी सब है मिलता..
मजबूत पाचन शक्ति सेहत होता है उत्तम.
चमन बहारों में फैली ताजी हवा है मध्धम..

चले तोड़ने सीताफल

रचनाकार- राजेन्द्र श्रीवास्तव

कोदू, भीमा और साथ में
दोनों से छोटा मंगल
लिये टोकरी छोटी-छोटी
चले तोड़ने सीताफल

कापी, पेन, किताबों से भी
इन तीनों को प्यार है
विद्यालय नियमित जाते हैं
मगर आज इतवार है
अब तक हर कक्षा में इनका
उत्तम रहा परीक्षाफल

लिये टोकरी छोटी-छोटी
चले तोड़ने सीताफल

कपड़े फट जाते हैं फँसकर
छोटी-बड़ी झाड़ियों में

इसीलिए कम कपड़ों में ही
चले पठार-पहाड़ियों में
घर से ज्यादा दूर नहीं है
मीठे-मीठे सीताफल

लिये टोकरी छोटी-छोटी
चले तोड़ने सीताफल

घंटे-दो घंटे में जितने
सीताफल मिल जाएँगे
सब मित्रों के साथ बैठकर
बड़े मजे से खाएँगे
इनकी गहरी बहुत मित्रता
नहीं कपट मन में न छल

लिये टोकरी छोटी-छोटी
चले तोड़ने सीताफल

सुबोध का सपना

रचनाकार- मौसमी प्रसाद

वह लड़का रोज मंदिर के किनारे बैठकर मंदिर में आने जाने वाले भक्तों की चप्पलों की देखभाल करता था. जब लोग मंदिर में दर्शन करके नीचे उतरते तो वह लड़का उनकी चप्पलें उन्हें देता, बदले में लोग उसे 50 पैसे दिया करते थे. वह लड़का सभी को गर्व से सैल्यूट करता था.

वह मंदिर मेरे ऑफिस जाने के रास्ते में था, मैं भी मंदिर रोज ही जाया करती थीं. दर्शन के लिए जाती और लौटते समय वह लड़का मेरी चप्पलें मुझे देता. मैं खुशी से उसे पैसे दे दिया करती थी. वह मुझे भी सैल्यूट करता. वह बड़े स्नेह से मुझे देखता, मुझे भी उससे लगाव सा हो गया था. एक आदत सी बन गई थी उसे देखने की. उसके सैल्यूट करने का तरीका मुझे बहुत पसंद था. पैसे देते समय उसके सैल्यूट का इंतजार रहने लगा था.

एक दिन मेरी तबीयत ठीक नहीं थी. मैंने सोचा आज ऑफिस नहीं जाऊँगी. सर में दर्द था. थोड़ी थकान थी और मैं घर पर ही आराम करना चाह रही थी. पर जैसे ही लेटी वैसे ही लगा कि मन मंदिर जाने को आतुर होने लगा था. उस बच्चे को देखने के लिए आज वह है या नहीं. उसका ख्याल मन मे आने लगा. मैंने मंदिर जाने का निर्णय लिया और निकल पड़ी. मंदिर जाने में देर तो हो ही गयी थी. जैसे ही मंदिर पहुँची तो देखा कि वह लड़का रोज की तरह ही बैठा हुआ है और खुशी से अपना काम कर रहा है. मुझे देखते ही बोला दीदी! आज आपको आने में देर क्यों हो गई? फिर बोला- आप जाइए भगवान आपका इंतजार कर रहे हैं.

मुझे हँसी आ गई,भला ईश्वर मेरा इंतजार क्यो करने लगे? मैं मंदिर गई भगवान के दर्शन किए और वापस आकर उस बच्चे से मैंने उसका नाम पूछा. वह बोला मेरा नाम सुबोध है. फिर मैंने पूछा तुम स्कूल नहीं जाते हो? वह बोला जाता हूँ न!रोज जाता हूँ. मुझे पढ़ना लिखना पसंद है दीदी. मैं बोली कब जाते हो?स्कूल के समय तो रोज तुम यहाँ रहते हो.

थोड़ी देर बिल्कुल चुप रहने के बाद वह बोला,दीदी मैं नाइट स्कूल जाता हूँ. दिन में स्कूल नहीं जा सकता न. दिन में मैं मंदिर में रहता हूँ, जिससे मुझे कुछ कमाई हो जाती है. मैं यह पैसे माँ को देता हूं माँ को थोड़ी सहायता मिल जाती है. मेरे पिताजी को पिछले साल लकवा मार गया था उसके बाद से वे बिस्तर से उठ नहीं सकते. इसलिए मैं काम करता हूँ. माँ बाहर काम करने नहीं जा सकती क्योंकि उन्हें पिताजी का ध्यान रखना पड़ता है और घर में दो छोटी बहनें भी हैं. मैं जो कमाता हूँ उसी से घर का खर्च चलता है. मैं मां के काम में भी मदद कर देता हूँ. मेरी दोनों बहनें मुझे बहुत प्यारी है. यह कहकर वह हँसने लगा.

यह सुनकर कुछ देर के लिए मै स्तब्ध रह गयी. फिर मैंने उससे पूछा तुम बड़े होकर क्या बनना चाहते हो ?

वह बड़े गर्व से बोला- दीदी मैं पुलिस इंस्पेक्टर बनना चाहता हूँ.

मुझे सुनकर अच्छा लगा मैं सोचने लगी इसलिए यह लड़का सैल्यूट करते समय गर्व महसूस करता है. मैने ईश्वर से प्रार्थना की कि हे प्रभु इस बच्चे को पुलिस इंस्पेक्टर ही बनाना. मैंने प्यार से उसके सर पर हाथ फेरा. जब इतना छोटा बच्चा अपने बचपन से समझौता करते हुए अपने सपनों को साकार करने की भी कोशिश करता है और अपने परिवार की भी सहायता करता है. उस बच्चे का सपना जरूर साकार होना चाहिए. सुबोध अपनी परिस्थितियों से हारा नहीं है, न मायूस हुआ है बल्कि उसने विषम परिस्थितियों में भी अपने सपने को साकार करने का रास्ता चुना है. अपने माँ-बाप का सहयोग कर रहा है. उसे पता है कि उसकी मंजिल क्या है. जब इस छोटे से पवित्र मन की भावना इतनी पवित्र है तो उसे अपनी मंजिल जरूर मिलेगी.

स्कूल

रचनाकार- सपना यदु

सुबह उठकर नित्य कर्म कर.
जाते हैं हम रोज स्कूल..

भले कोई भी मुश्किल आए.
जाते नदी पार करके पुल..

इसकी भूमि है पावन.
विद्या तिलक सा लागे धूल..

हरियाली है चारों ओर.
प्यारे-प्यारे खिले हैं फूल..

लौकी, भिंडी, भटा, टमाटर.
किचन गार्डन में फले हैं खूब..

खाकर यहां स्वादिष्ट भोजन.
बंद बुद्धि जाती है खूल..

यहां आकर हम हैं जाते.
अपने सारे गम को भूल..

खूब मजा यहां पर आता.
हमको प्यारा है स्कूल..

माँ मुझे स्लेट और बत्ती दे दो

रचनाकार- लुकेश्वर सिंह

मां मुझे स्लेट और बत्ती दे दो.
मैं भी स्कूल पढ़ने जाऊंगा.
पढ़ लिखकर समाज के सभी वर्गों को पढ़ाऊंगा.
शिक्षा पाने का हक सबको है यह बात सभी को बताऊंगा.
हो सकता है मैं भी एक शिक्षक बन जाऊंगा.

मां मुझे स्लेट और बत्ती दे दो.
मैं भी स्कूल पढ़ने जाऊंगा.
इंसान को सही गलत के ज्ञान का बोध कराउंगा.
भेदभाव और छुआछूत की भावना सबके मन से हटाउंगा.
माँ मुझे स्लेट और बत्ती दे दो मैं भी स्कूल पढ़ने जाऊंगा.
शिक्षा है इंसान के जीवन का सबसे बड़ा हथियार यह बात सभी को बताऊंगा.
मां मुझे स्लेट और बत्ती दे दो.
मैं भी स्कूल पढ़ने जाऊंगा.
शिक्षा के आते ही सबके घरों में उजाला होगा.
घर-घर में एक किरण बेदी और एक कलाम राजदुलारा होगा.

मां मुझे स्लेट और बत्ती दे दो.
मैं भी स्कूल पढ़ने जाऊंगा.
मेरे देश में सभी इंसानों के तन पर कपड़ा होगा.
कोई ना होगा भूखा यहाँ ना कोई होगा बेघर.
देश के कोने कोने से आतंक को मिटाउंगा.

माँ मुझे स्लेट और बत्ती दे दो मैं भी स्कूल पढ़ने जाऊंगा.
जग को नई दिशा दिखाऊंगा.
अपने देश के लिए कुछ अच्छा कर जाऊंगा.
नाज करोगी तुम भी मुझ पर जब मैं देश का लाल कहलाउंगा.

औघड़ दानी

रचनाकार- स्व. महेन्द्र देवांगन "माटी"

भोले बाबा औघड़ दानी, जटा विराजे गंगा रानी.
नाग गले में डाले घूमे, मस्ती से वह दिनभर झूमे..

कानों में हैं बिच्छी बाला, हाथ गले में पहने माला.
भूत प्रेत सँग नाचे गाये, नेत्र बंद कर धुनी रमाये..

द्वार तुम्हारे जो भी आते, खाली हाथ न वापस जाते.
माँगो जो भी वर वह देते, नहीं किसी से कुछ भी लेते..

मेरी बेटियाँ

रचनाकार- संतोष कुमार पटेल

शीतल बयार जैसी चलती बेटियाँ,
निर्मल जल जैसी बहती बेटियाँ.

ठंडक दिलाती छांव सी बेटियाँ,
घाव को भरती दवा सी बेटियाँ.

धरती को जन्नत सा बनाती बेटियाँ,
दो कुलों की मर्यादा निभाती बेटियाँ.

कोमल हाथों से घर सजाती बेटियाँ,
दुख सहकर भी मुस्कुराती बेटियाँ.

कभी रसोई में हाथ बटाती हैं बेटियाँ
कभी दुश्मन के छक्के छुड़ाती बेटियाँ.

घर-आँगन को महकाती बेटियाँ,
एवरेस्ट चढ़ फतेह कर जाती बेटियाँ.

राष्ट्रपति बन देश चलाती बेटियाँ,
चाँद पर भी परचम फहराती बेटियाँ.

हमारे पौराणिक पात्र- महर्षि वाल्मीकि

संस्कृत के महाकाव्य रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि आदिकवि के नाम से प्रसिद्ध हैं. संस्कृत में सर्वप्रथम श्लोक की रचना महर्षि वाल्मीकि ने ही की थी इसलिए उन्हें आदिकवि कहा जाता है.

महर्षि वाल्मीकि का जीवन बेहद प्रेरणादायक है. प्रारंभ में वे डाकू हुआ करते थे, लोगों से धन लूटा करते थे. लेकिन एक घटना से इनका जीवन पूरी तरह बदल गया और वे ऋषि बन गए.

वाल्मीकि का जन्म आश्विन माह की पुर्णिमा के दिन हुआ था हर साल आश्विन माह की पुर्णिमा को वाल्मीकि जयंती मनाई जाती है.

पौराणिक कथा के अनुसार इनका जन्म ब्राह्मण परिवार में हुआ था और इनके पिता और माता का नाम क्रमशःवरुण और चर्षणी था. वरुण महर्षि कश्यप और अदिति के नौवें पुत्र थे. कहा जाता है कि भील समुदाय के लोगों ने शैशवावस्था में इनका अपहरण कर लिया था. जिसके बाद इनका लालन-पालन भील समुदाय में हुआ.

महर्षि वाल्मीकि पहले डाकू रत्नाकर नाम से कुख्यात थे. वे लोगों को बंदी बनाकर उनसे लूट-पाट किया करते थे. उपनिषद की कथा के अनुसार एक बार नारद मुनि जंगल से गुजर रहे थे तभी डाकू रत्नाकर ने उन्हें बंदी बना लिया. बंदी नारद मुनि ने रत्नाकर से पूछा कि तुम यह कार्य क्यों कर रहे हो? रत्नाकर ने उत्तर दिया कि अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए चोरी करते हैं. नारद जी ने रत्नाकर से पूछा कि तुम्हारे पापों का भुगतान तुम्हारे परिवार वालों को भी करना पड़ेगा. क्या तुम चाहते हो कि उन्हें भी तुम्हारे पापों की सजा मिले? रत्नाकर ने

इसका उत्तर हाँ में दिया. रत्नाकर के हाँ कहने के बाद नारद ने रत्नाकर से कहा कि अपने परिवार वालों से पूछकर आओ कि क्या वो तुम्हारे पापों का दण्ड भोगने को तैयार हैं?

नारद जी के कहने पर रत्नाकर अपने परिवार वालों के पास गया. प्रश्न का उत्तर देते हुए परिवार वालों ने रत्नाकर के बुरे कर्मों के दण्ड में भागीदार बनने से इनकार कर दिया.

परिवार जनों से ऐसा उतर मिलने के बाद रत्नाकर वापस नारद जी के पास गया और नारद जी को सारा वृत्तांत बताते हुए उनसे अपने लिए सही राह दिखाने का आग्रह किया.

नारद मुनि ने उन्हें राम नाम का जाप करने को कहा. नारद मुनि की बात मानते हुए रत्नाकर एक वन में जाकर राम-राम का जाप करने लगा. कई वर्षों तक कठोर तपस्या में लीन रहा. यहाँ तक कि रत्नाकर के पूरे शरीर पर चींटियों ने बाँबी बना ली. चींटियों की बाँबी के संस्कृत नाम वाल्मीक के कारण इनका नाम वाल्मीकि पड़ गया. इस तरह रत्नाकर एक डाकू से महर्षि वाल्मीकि में बदल गया.

पौराणिक कथा के अनुसार एक शिकारी द्वारा क्रोंच पक्षी की हत्या करने की घटना से व्यथित महर्षि वाल्मीकि ने शिकारी को श्राप दिया था. यह श्राप अकस्मात् उनकी वाणी से श्लोक के रूप में उच्चरित हुआ यह श्लोक इस तरह था

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः.
यत्क्रौंचमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम्॥

अर्थात्-अरे बहेलिये, तूने काममोहित मैथुनरत सारस पक्षी को मारा है. जा तुझे कभी भी प्रतिष्ठा की प्राप्ति नहीं होगी.

इस घटना के बाद ब्रह्माजी ने महर्षि वाल्मीकि को रामायण की रचना करने का कार्य सौंपा. तब महर्षि वाल्मीकि ने पूरी रामायण की रचना संस्कृत के श्लोको के रूप में की. रामायण में लगभग 24000 श्लोक हैं.

रामायण के अनेक श्लोकों से यह स्पष्ट होता है कि महर्षि वाल्मीकि खगोल विद्या और ज्योतिष शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् थे.

कथाओं के अनुसार अयोध्या छोड़ने के बाद सीता जी महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में ही रही थी और इन्होंने राम और सीता के पुत्रों लव और कुश को शिक्षा दी थी.

महर्षि वाल्मीकि को रामायण के रचयिता और आदिकवि के रूप मे हमेशा याद रखा जाएगा.

समय बहुत बलवान

रचनाकार- शशि पाठक

सब दिन होते ना एक समान,
मंजिल की चाह में हम सब भटकें.
पर राह नहीं है आसान,
होता है समय बहुत बलवान.

मंजिल को जो भूल है जाता,
दर -दर की ठोकर है खाता.
कठिन राह पर चले जो प्राणी,
जीवन में सफल वही हो पाता.

यही है जीवन की पहचान,
होता है समय बहुत बलवान.

गुजरा समय नहीं आएगा,
कर्महीन फिर पछताएगा.
समय की फाँस में बंधे हैं सब,
जो ना चले वो छूट जाएगा.

चाहे हो नेता, अफसर या किसान,
होता है समय बहुत बलवान.

राजा रंक, कभी रंक हो राजा,
कर्म की गति कोई टाल ना पाता.
कोई मखमल में भी सो ना पाए,
कोई काँटों पर भी है सो जाता.

जाने क्या-क्या लेख लिखे भगवान,
होता है समय बहुत बलवान.

सोचो क्या और क्या होता है,
सपना कब पूरा होता है.
बुरे समय में भी जो जाए,
मंजिल उसी को मिलती है.

बढ़ चलो समय की कर पहचान,
होता है समय बहुत बलवान.

नमन

रचनाकार- रीता गिरी

माता- पिता के चरणों में, नमन शत् बार है.
जिनके आशिष से मिला, खुशियों का संसार है.

माता- पिता भगवान का दिया, सबसे अनमोल उपहार है.
इस धरती पर वही,हम सबके पालनहार है.

मेरे लिए माता ज़मीं, तो पिता आसमान है.
उनको सदा खुश रखूं, यही मेरा अरमान है.

माता-पिता के आदर्श और संस्कार, जीवन के आधार है.
माता-पिता की ममता और प्यार, जीवन का सर्वोत्तम उपहार है.

शिक्षा-दीक्षा देकर हम सबको, ज्ञानवान बनाया है.
मानवीय मूल्यों का देकर ज्ञान, जीवन धन्य बनाया है.

माता -पिता के अथक प्रयासों ने, हमें मंजिल तक पहुंचाया है.
नि:स्वार्थ प्रेम और संस्कार देकर, अपना कर्तव्य निभाया है.

हां माता-पिता के रूप में, मैंने पाया भगवान है.
उनसे ही मेरा अस्तित्व, उनसे ही मेरी पहचान है.

माता- पिता के चरणों में, नमन शत् बार है.
जिनके आशिष से मिला, खुशियों का संसार है.

क्यों?

रचनाकार- ईश्वर साहू

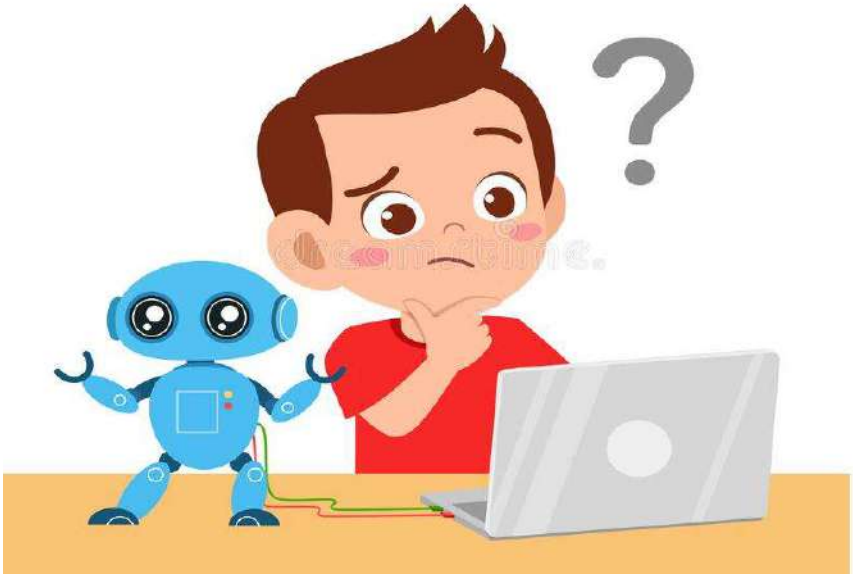

कहते हो, पेड़ हमारा जीवन है,
तो क्यों नाश कर रहे हो ?
पर्यावरण को प्रदूषण और
अंधेरे में धकेल रहे हो?
आज मानव इतने भयानक हो गए हैं,
कि जानवर भी उनके डर से भाग रहे,
वाह रे तू क्यों भूल गया?
याद करो वो दिन,
जब बिना कपड़ों के घूमते थे.
जानवर को जानवर नहीं,
अपनी बिरादरी का समझते थे.
पेड़ ही तुम्हारे इज्जत को ढकते थे.
तो क्यों आज पर्यावरण के कपड़े उतार रहे हो?
प्रकृति को अलग क्यों समझते हो?
अपना नहीं सौतेला सा व्यवहार करते हो?
ठीक आज भौतिकवाद की,
लहर में दौड़ रहे हो.

अपने अस्तित्व को भूल गए,
अभी भी समय है जाग जाओ
इनको मित्र और संबंधी बनाओ
जितना हो सके अधिक से अधिक पेड़ लगाओ.
अपना जीवन आगे खुशहाल बनाओ.

देवारी के तिहार

रचनाकार- सपना यदु

आगे आगे रे संगी देवारी के तिहार.
जगमग-जगमग दिया बरत हे उज्जर होगे सबो दुआर..

खुशी से लईका झूमत नाचत हे, खुश हावे सबो परिवार.

सुरसुरी, एटम बम, लक्ष्मी, अउ नीक लागत हे अनार,,
सबो फटाखा फोड़ै लईकामन, छा गे हे खुशी के फुहार..

फसल कटगे, कोठी भरे हे, राजा बनगे हे बनिहार.
नवा -नवा कपड़ा पहिर के, करै सबो ला जय जोहार..

ठेठरी, खुरमी, बरा, सुहारी, बने हे अब्बड़ पकवान.
अब्बड़ मजा से खावत हावे, का लईका का सियान..

पूजा होवत हे लक्ष्मी दाई के, चघे हे लाई, बतासा अउ पेड़ा,
चउंक पूरे अंगना दुआरी में, सजे हे देखो गौरा चौरा..

कोन्हों बारत हे माटी के दिया, कोन्हों बारै दिया चांउर के पिसान..
भूला के अपन सबो रीस बैरी ला,गला मिलत हे, सबों मितान..

एक नन्हा सा भालू

रचनाकार- नीरज त्यागी `राज`

एक छोटा, नन्हा सा भालू,
बचपन से था बहुत ही चालू.
दादी माँ का था वो प्यारा,
घूमता पूरे दिन भर आवारा..

पढ़ने-लिखने से था कतराता,
पिता से अपने बहुत घबराता.
मोबाइल का था बहुत शौकीन,
खेलता मोबाइल पर गेम तीन..

लूडो से था बहुत ही प्यार,
पबजी खेलते थे तीन यार.
साँप-सीढ़ी उसको भाता,
खाना खाना वो भूल जाता..

मम्मी उसकी रहती परेशान,
दिनभर वो उन्हें करता था हैरान.
इन खेलो के खिलाफ था राजा,
बैन किये गेम, बजा दिया बाजा..

मम्मी पापा को भा गया उपाय,
लगता बच्चे मोबाइल से दूर हो जाएँ,

मुर्गा बाँग लगाता है

रचनाकार- प्रिया देवांगन प्रियू

उठो प्यारे आँखे खोलो.
सूरज दादा आये है..
लाल लाल किरणों के सँग में.
सब में आश जगाये है..

मेरा मुर्गा है अलबेला.
जल्दी से उठ जाता है..
कुड़कूँ-कूँ आवाज लगा कर.
सबको वह जगाता है..

सुबह-सुबह छत में चढ़ कर.
कुकडू-कूँ चिल्लाता है..
मुर्गी देखकर मुर्गा राजा.
गीत नया वह गाता है..

मुर्गियों का होता है राजा.
वह रोज सैर पर जाता है..
चारे चुगता रहता दिनभर.
सबको सन्देश सुनाता है..

सिर के ऊपर कलगी रखता.
दिन भर वह इठलाता है..

घूम घूम कर इधर उधर.
दाने चुग कर आता है..

चूजों को अपने सँग लेकर.
बड़े मजे से घुमाता है..
सुबह-सुबह जल्दी उठ कर.
मुर्गा बाँग लगाता है..

एकता का राज

रचनाकार- ईश्वर साहू

मैं चला जा रहा था,
अचानक मधुर स्वर सुनाई पड़ा,
देखा नजारा अच्छा लग रहा था.
चमेली नाच रही थी,
गुलाब गाना गा रहा था.
वैजयंती स्वर में स्वर मिला रही थी,
गेंदा बाजा बजा रहा था.
रहा न गया पूछ बैठा मै,
क्यों? क्या बात है ?
अलग-अलग जाति के होकर
स्वर में स्वर मिला रहे हो?
इतना सुनकर गुलाब और लाल हो गया
बोला तुम कौन हो ?
कहाँ से आए हो?
अनेकता में एकता का राज,
मालूम नहीं है.
तू भारत देश का निवासी नहीं है.
तू भारत देश का निवासी नहीं है.

शर्त

रचनाकार- दीपक कँवर

बत्तख रोज की भाँति गाँव के नजदीक तालाब गई, गर्मी के कारण तालाब का पानी बहुत कम हो गया था. तालाब के किनारे रहने वाला कछुआ भी बत्तख के पास आ गया. तालाब का पानी कम होने से दोनों चिंतित हो रहे थे. वे दोनों सोच रहे थे कि ऐसी स्थिति में क्या किया जाए? अंततः दोनो ने दूसरे तालाब में जाने का निश्चय किया और साथ-साथ दूसरे तालाब की ओर चल पड़े.

दूसरे तालाब के किनारे बैठे मेंढक ने उन दोनों को आते हुए देख लिया. जब बत्तख और कछुआ नजदीक पहुँचे तो मेंढक कड़ककर बोला- रुको मैं यहाँ का रखवाला हूँ, मेरी अनुमति के बिना तुम इस तालाब के पानी का उपयोग नहीं कर सकते. बत्तख ने कहा- हमारे तालाब का पानी सूख गया है, हमारे लिए अब इसी तालाब का सहारा है. आप बताइये कि हमें अनुमति के लिए क्या करना होगा? मेंढक ने कहा मेरी एक शर्त पूरी करोगे तभी अनुमति दूँगा. बत्तख ने पूछा- बताइये क्या शर्त है? मेंढक ने कहा- तुम्हें बिना भीगे और बिना तैरे इस तालाब को पार करना होगा.

शर्त सुनकर बत्तख और कछुए ने आपस मे चर्चा की. कछुए ने बत्तख के कान मे फुसफुसाते हुए एक उपाय बताया. फिर मेंढक के पास आकर बत्तख ने कहा- ठीक है हम दोनो को आपकी शर्त मंजूर है पर हम दोनो अलग-अलग तालाब पार करेंगे. मेंढक उनकी बात मान गया

कछुए ने बत्तख को अपनी पीठ पर बिठाकर तालाब पार कर लिया. तालाब के दूसरे छोर पर पहुँचने के बाद लौटते समय कछुआ बत्तख की पीठ पर बैठ गया, और दोनों पहले किनारे पर आ गये. इस तरह दोनो ने शर्त पूरी कर दी. मेंढक उनकी चतुराई देखकर बहुत खुश हुआ. अब तीनो तालाब मे मित्रतापूर्वक रहने लगे.

पढ़ई तुहर दुआर

रचनाकार- नीलम

महामारी संकट मा संगी थम गए देस महान,
शिक्षा फिर घर-घर उतरिस नेटवर्किंग हे बलवान!

खेल-खेल में पढ़ई लिखई अब दुआर दुआर हे उतरिस,
ध्रुवतारा कस उतरिन शिक्षक चमचम गाँव घर चमकिस

नवा नवा शिक्षा अभियान ला करके सब अभिनन्दन,
स्वीकारिन नोनी बाबु सब ऑन लाइन के बंधन

आ जाए अब कोनो संकट आगू बढ़ के दिखाना हे,
लक्ष्य बेध ला साध के संगी देस ला अब जिताना हे!

लहलहाही जम्मो बारी अब घर-घर दीप जलाना हे,
नवा जुग मा छउवा मन ला नवाचार सिखलाना है!

वर्षा ऋतु प्यारी है

रचनाकार- उषा साहू

वर्षा ऋतु प्यारी है
आह कितनी न्यारी है
सुंदर सजी क्यारी है
लगती बड़ी मनोहारी है..

वर्षा ऋतु प्यारी है
पानी की बूंद पड़ी तो
सुगन्धित हुई धरती न्यारी
कोयल की गूँजी किलकारी है...

वर्षा ऋतु प्यारी है
वर्षा की बौछार पड़ी तो
मोर ने फैला दी अपनी
रंगीनी पँखो को निराली है. .

वर्षा ऋतु प्यारी है
चारो ओर फैली हरियाली है
चहुओर छाई खुशियाली है
धरती लगती बड़ी सुहानी है..

हमारे प्रेरणास्रोत- देशबंधु चित्तरंजन दास

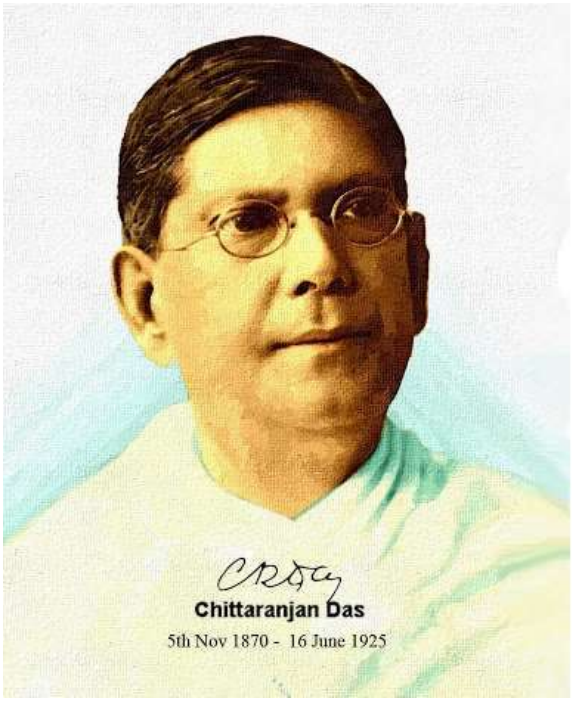

हेलो बच्चो,

आज हम बात करेंगे एक ऐसे एक व्यक्तित्व की जो एक महान स्वतंत्रता सेनानी,राजनीतिज्ञ, कवि व देश के जाने माने वकील थे.उनका नाम चित्तरंजन दास है,जिनको लोग सम्मानपूर्वक देशबंधु भी बुलाते थे.उनका जन्म ५ नवंबर १८७० को कोलकाता में हुआ था.

उनके पिता भुवन मोहन दास भी कोलकाता उच्च न्यायालय में एक जाने माने वकील थे.शायद इस पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण ही वे बी ए की डिग्री पूर्ण करने के बाद वकालत की पढ़ाई करने के लिए इंग्लैंड चले गए.दो साल बाद1892में बैरिस्टर बनकर भारत लौट आए.

इसके तुरंत बाद उन्होंने कलकत्ता हाईकोर्ट में वकालत शुरू की. उन्होंने कई केस लड़े जिन में से एक केस बिहार के क्रांतिकारी और भोजपुरी के कालजई गीतों के रचनाकार का था. मामला ये था की ब्रिटिश सरकार की अर्थव्यवस्था को ध्वस्त करने के उद्देश्य से, इन्होंने और इनके साथियों ने जाली नोट एवं ढलुआ सिक्के बनाने का प्रयास किया. चितरंजन जी ने इनकी सजा बीस साल से घटाकर सात साल करवा दी. एक और भी अहम केस उन्होंने वंदेमातरम के सम्पादक अरविंद घोष के लिए लड़ा था. घोष पर अलीपुर बम कांड में शामिल होने के संदेह में ब्रिटिश सरकार द्वारा राजद्रोह का मुक़दमा चलाया जा रहा था किंतु चित्तरंजन जी की प्रभावपूर्ण प्रस्तुति ने उन्हें बचा लिया. इस मुक़दमे में जिस निःस्वार्थ भाव और तेजस्वितापूर्ण

वकालत का उन्होंने परिचय दिया, उसके कारण समस्त भारत वर्ष में राष्ट्रीय वकील के नाम से उनकी ख्याति फैल गयी. इस प्रकार के मुक़दमों में वह पारिश्रमिक भी नहीं लेते थे.

अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर हो रहे अत्याचारों व देश की ग़रीबी और दु:र्दशा ने उन्हें इतना दुखी कर दिया कि वे अपनी जमी हुई वकालत छोड़कर पूर्णतया राजनीति में आ गये. उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया. अध्यक्ष की हैसियत से चित्तरंजन दास ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विधानसभाओं में संघर्ष करने और निर्वाचन में भाग लेने का प्रस्ताव रखा. जब कांग्रेस ने चित्तरंजन दास की कौंसिल एंट्री के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया, तब वे कांग्रेस से अलग हो गए और पंडित मोतीलाल नेहरू के सहयोग से एक नए संगठन स्वराज दल की स्थापना की.

उन्होंने महात्मा गांधी जी के साथ असहयोग आंदोलन में भाग लिया. खुद ही विदेशी कपड़ों को जलाया और खादी पहनने लगे. इस राजनीतिक सफ़र के दौरान वे कई बार जेल भी गए. उन्हें पूरा भरोसा था कि अहिंसा और क़ानूनी विधियों के बल पर भारत को आज़ाद कराया जा सकता है.

अपनी मृत्यु के कुछ समय पहले चित्तरंजन दास ने अपना घर और उसके साथ की ज़मीन को महिलाओं के उत्थान के लिए राष्ट्र के नाम कर दिया था. अब इस परिसर में चित्तरंजन दास राष्ट्रीय कैन्सर संस्थान है. दार्जिलिंग स्थित उनका निवास अब एक मात्र शिशु संरक्षण केंद्र के रूप में राज्य सरकार द्वारा संचालित किया जाता है. इसी तरह दक्षिण दिल्ली स्थित चित्तरंजन पार्क क्षेत्र में ऐसे बहुत सारे लोगों को आवास दिया गया जो बँटवारे के बाद भारत आए थे.

बच्चों इस में आलेख हमने उनके जीवन के बहुत थोड़े से पहलुओं पर बात की किन्तु इतने से ही आपने यह महसूस किया होगा कि उन्होंने अपना पूरा जीवन देश को समर्पित कर दिया. वे चाहते तो एक एश्वर्यपूर्ण व सुखमय जीवन जी सकते थे किन्तु इसे ठुकरा कर उन्होंने देशसेवा के कठिन और चुनौतीपूर्ण रास्ते को चुना. यही कारण है कि आज कृतज्ञ देश उन्हें बहुत श्रृद्धा के साथ याद करता है.

नदी हूँ नदी हूँ

रचनाकार- द्रोण कुमार सार्वा

नदी हूँ नदी हूँ
पहाड़ो की बिटियाँ
प्रपातों में खेली
उछलकर हवाओं
से आंख मिचौली
कही शांत निर्जन
कही भीड़ भारी
हरे खेत खलिहान
बनकर खुशहाली
मैदान तट पर मैं
आगे बढ़ी हुँ...
नदी हूँ, नदी हुँ..

कितने अड़ंगे
रुकावट है भारी
बने राह रोड़ा
मेरी इस सवारी
मगर मैं उलझन

से भिड़कर बढ़ी हूँ
खुशहाल जन -मन
मैं करती चली हुँ
नदी हुँ, नदी हुँ...

वो गन्दा सा नाला
वो नन्ही सी नदियां
बाँधे सरोवर
कही ताल,तरिया
छोटा, बड़ा न
कोई भेद इनसे
सब है सहायक
सुख-दुख के संगी
सागर के राहों में
ज्यों-ज्यों बढ़ी हुँ..
नदी हूँ, नदी हूँ...

समय के फलक पर
जो इतिहास बीता
कोई युद्ध हारा
किसी ने है जीता
संस्कृति अनेकों
सभ्यता समेटे
मेरे तट की घटना
वो विस्मृत अवशेषें
समेटे मैं चुपचाप
साक्षी बनी हुँ....
नदी हूँ, नदी हुँ...

मेरे गाँव की शाम

रचनाकार- द्रोण कुमार सार्वा

गया क्षितिज से दूर उजाला,
सूरज करने चला आराम
फैल रही चहुँओर लालिमा,
मेरे गांव की शाम...

ऊँचे नभ पर झुंड -झुंड में,
लौट रही पूरब से चिड़िया.
थक हारकर लगा हो जैसे,
सबसे प्यारी अपनी दुनिया.

बिखर रहे गोधुल गाँवो में,
गौठानों से लौटे गइया.
रम्भाते नन्हे बछडों ने,
आहट दी मैय्या-मैय्या.

अपनों के सब संग साथ हो,
पहुँच रहे है अपने धाम.
बड़ी अनोखी मन को भाये,
मेरे गाँव की शाम...

नदी तीर के कुँए पर

मटकी ले पनिहारिन पहुँचे
दूर खेत खलिहानों से सब
लौटे श्रम की आरत करके

अम्मा ने कंडो को लेकर
भोजन को है आग सुलगाई
नई बहुरिया दिया बाती कर
बड़े जतन से चली रसोई

मंदिर की घण्टी टन-टन
सजी पूजा की थाल
बड़ी अनोखी मन को भाये
मेरे गांव की शाम...

रिश्तों का मोल

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू"

एक गाँव मे राजू और रामू दो भाई रहते थे. दोनों सारे समय एक साथ ही रहते,साथ-साथ स्कूल जाते, साथ ही खेलते और घर पर साथ ही पढाई करते थे. समय के साथ दोनों बड़े हो गए. दोनों की उम्र काम करने की हो गयी. दोनों सच्चे व ईमानदार थे. दोनों को एक ही कंपनी में नौकरी मिल गई. उनके माता-पिता बहुत खुश थे कि दोनों भाइयों में कितना प्रेम है. अब भी दोनों साथ-साथ काम पर जाते थे. दोनों की शादी भी हो गयी. राजू कंपनी में ओवरटाइम भी करता था, इसलिये उसके पास ज्यादा पैसे आने लगे. रामू को सिर्फ तनख्वाह ही मिलती थी. धीरे धीरे राजू को पैसे का घमंड होने लगा. रामू को इस बात का अहसास हुआ तो उसने राजू को समझाया कि देखो भाई पैसे का घमंड छोड़ दो और अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार निभाओ पैसा हमेशा काम नही आता. विपरीत समय में रिश्तेदार और दोस्त ही काम आते हैं. राजू ने रामू से बहस शुरू कर दी. राजू बोला आजकल पैसा ही सब कुछ हैं रामू. तू क्या समझेगा तू तो आज भी गरीब है और देख मैं कितना अमीर हो गया हूँ. धीरे-धीरे राजू, रामू और सभी रिश्तेदारों से दूर होता गया. फिर एक दिन अचानक राजू की तबीयत बिगड़ने लगी. उसको कैंसर हो गया था. इलाज में सभी पैसे खत्म होने लगे थे. तब राजू को रामू की बात याद आई. उसने रामू को फोन कर सारी बात बताई. रामू तुरन्त हॉस्पिटल में आया. दोनों भाई गले मिलकर रोने लगे. अब राजू की समझ में आ गया कि दोस्ती और रिश्तों का मोल क्या होता है. राजू, रामू से माफी माँगते हुए कहने लगा कि यदि मैं तेरी बात उसी समय समझ जाता तो आज मेरी ये हालत नहीं होती. मैं पैसे के मोह में पागल हो गया था. अब मेरे पास सिर्फ तू ही हैं रामू. रामू ने कहा ऐसा मत बोल भाई समय रहते तुझे गलती का एहसास हो गया और क्या चाहिये. फिर दोनों भाई पहले जैसे साथ साथ रहने लगे.

शिक्षा

रचनाकार- हितेंद्र कोंडागंया

चलो शिक्षा पर
कुछ लिखने की
कोशिश की जाए
एवरेस्ट पर चढ़ने का
प्रयास किया जाए.

इसी बहाने मित्रों का
सहयोग प्राप्त किया जाए
चलो शिक्षा पर
लिखने अभिनव कार्य
सफल किया जाए.

क्या यह संभव है
एक अदना सा
सहायक शिक्षक
शिक्षा पर कुछ
लिख पाएगा
कुछ कर भी पाएगा.

कोशिश करने में
क्या गुरेज है

हार मानने से
तो यह बेहतर है
अतएव एक जोर
लगाया जाए.

कम से कम
आजमाईश तो
किया जाए.
शिक्षा का महत्व तो
कह लिया जाए.

स्वर्गीय मा जो
एक सहायक शिक्षक
रही अपने जीवन के
अंतिम क्षण तक.
मुझे सौंप गई
कर्तव्य निर्वाह के
शेष उत्तरदायित्व.

ताकि कम से कम
उनका दिया हुआ
ऋण से उंचय तो
हो सकूं. वर्ना
दबा रहता उनके
दिए गए शिक्षा के
ऋण तले आजीवन..

पढ़ई तुहर दुआर

रचनाकार- अल्का राठौर

तीन प्रकार ले आय हे,
पढ़ई तुहर दुवार !
ऑनलाइन,ऑफलाइन,
लाउड स्पीकर क्लास!

कोरोना के संकटकाल मा,
घर ले बाहिर झन निकल!
घर म बइठे- बइठे,
जइसे चाहे वइसे पढ़ !

ऑनलाइन म पढ़े के
तैं नवा तकनीक गढ़
ऑफलाइन म पढ़बे,
तब नवा प्रयोग करबे!

लाउडस्पीकर म पढ़बे,
तब अड़बड़ मजा करबे !

ये कोरोना हर भारी,
तबाही मचा दिस!
हमन सबला तितिर-
बितिर कर दिस!

स्कूल ले दूर हो गेन
तब का होगीस !
हमर सर मेडम मन तो,
आधा कोर्स पूरा पढ़ा दिस!

नवरात्रि

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

सजता सुंदर द्वार है, स्वागत करते लोग.
माता रानी आती हैं, सभी लगाते भोग..
सभी लगाते भोग, भक्त जन करते सेवा.
लेते आशीर्वाद, सभी पाते हैं मेवा..
सभी जलाते दीप, द्वार सुंदर है लगता.
आती माता रोज, घरों में दीपक सजता..

आई सबके द्वार में, माता रानी आज.
शीश झुकाते लोग हैं, बनते बिगड़े काज..
बनते बिगड़े काज, कामना पूरा करतीं.
खुश होते हैं लोग, खुशी जीवन में भरती..
दीप जलाते लोग, दिलों में खुशियाँ छाई.
सभी भक्त के साथ, द्वार में माता आई..

बेटियाँ

रचनाकार- सपना यदु

आँगन को गुलाबों सा महकाती हैं, बेटियाँ!
पापा के लिए आसमान की परी हैं, बेटियाँ!
भाई के सूनी कलाइयों की मान हैं, बेटियाँ!
घरौंदे के पिटारों में संस्कारों की खदान हैं, बेटियाँ!
अपने ही बाबुल के घर में मेहमान हैं, बेटियाँ !
उस घर की पहचान बन जाती हैं, जिस घर से अनजान हैं, बेटियाँ!
लड़के अगर 'आज' हैं तो आने वाला कल हैं,बेटियाँ !बेटों का शौक पूरा हो,
पर टूटी फूटी चीजों को जोड़कर शौक पूरा कर लेती हैं, बेटियाँ !
बेटा तो एक कुल का है, पर दो-दो कुलों की लाज रखती हैं, बेटियाँ !
घर की आन-बान और साक्षात लक्ष्मी का स्वरूप हैं, बेटियाँ !
आंगन की रंगोली और हाथों की मेहंदी है, बेटियाँ !
डॉक्टर, नर्स, पुलिस और आर्मी हर जगह हैं, बेटियाँ !
बेटों को टक्कर दे कदम से कदम मिला रही हैं, बेटियाँ !
बेटा ना हो जिस वंश में तो क्या, आज अर्थी भी उठा रही हैं, बेटियाँ!
अरे, दुनिया वालों जिसे कहते हो,आगे तुम्हें चूल्हा ही फूंकना है,
जरा सोचो__
जिस धरती पर खड़ा होकर, आसमान को निहारते हो,
उस चांद तक भी पहुंच गई हैं, बेटियाँ!
यह जानते हैं सभी बहन, माँ और पत्नी का किरदार जिसके बिना अधूरा है,
फिर भी बेकसूर बेबस लाचार गर्भ में मार ही मार दी जाती हैं, बेटियाँ!

सफलता की कहानी- फगनी का छात्रावास में

नया जीवन

बालिका का नाम- फगनी मंडावी

पिता का नाम- हड़मा मंडावी

माता का नाम- मासे मंडावी

कक्षा - आठवीं

यह कहानी सुकमा ज़िले में जंगलों के बीच घिरे एक छोटे से गाँव चीतलनार की एक 12 वर्षीय लड़की फगनी मंडावी की है. फगनी का परिवार शुरू से ही गरीबी का सामने करता आया है. फगनी के माता-पिता दूसरों के खेतों में काम करके जीवन यापन कर रहे हैं और अपनी बेटी को पढ़ाना चाहते हैं. फगनी का गाँव घने जंगलों के बीच बसा हुआ है जहाँ नक्सलियों का खतरा बना रहता है. नक्सलियों ने गाँव के विद्यालय को भी नष्ट कर दिया जिस कारण बच्चों

को पढ़ाई के लिए बाहर जाना पड़ता है. फगनी भी बचपन से अपने घर से दूर रहकर पढ़ाई कर रही है. फगनी ने कक्षा 1 से 5 तक की पढ़ाई घर से 20 किलोमीटर दूर आश्रम शाला पुसपाल में की. 5 वीं तक की पढ़ाई पूरी करने के बाद फगनी ने नए छात्रावास, पोर्टा केबिन छिंदगढ़, जिला - सुकमा में प्रवेश लिया. इस छात्रावास में कक्षा 1 से 10 तक पढ़ने वाली 600 से अधिक बालिकाएँ एक साथ रहकर पढ़ाई करती है.

जब फगनी पोर्टा केबिन में कक्षा 6 में आयी तो वहाँ 600 बालिकाओं को देखकर डर गयी, उसके लिए सारे लोग अनजान थे, वो किसी से ठीक से बातचीत नहीं कर पाती थी और अकेलापन महसुस करने लगी थी. धीरे-धीरे फगनी का डर उस पर हावी होने लगा, उसे घर की, अपने माता पिता की बहुत याद आने लगी लेकिन वो हॉस्टल से घर नहीं जा सकती थी इसलिए फगनी सभी से छिपकर रोया करती थी. फगनी पढ़ाई में कमजोर थी जिसके कारण उसे कक्षा में भी डर लगने लगा था और पढ़ाई से रूचि हटने लगी थी. फगनी सोचती थी कि मैं कमजोर हूँ, मुझे पढ़ना नहीं आता, किसी से बात करना नहीं आता. डर के कारण फगनी न किसी से बात करती थी और न ही किसी गतिविधि में भाग लेती थी. जब कक्षा में कॉपी चेक की जाती तो भी वह सामने नहीं जाती थी. फगनी डर और नकारात्मकता का शिकार हो चुकी थी.

6 महीने बीतने पर भी फगनी के व्यवहार में कोई खास परिवर्तन नहीं आया. इसके बाद फगनी ने जनवरी 2019 से मार्च 2019 तक कक्षा 6 वीं के एवं जुलाई 2019 से फरवरी 2020 तक कक्षा 7 के जीवन कौशल सत्रों में भाग लिया. जीवन कौशल सत्रों के माध्यम से फगनी के जीवन में एक ऐसी रोशनी आई जिसने उसे जीवन में आगे बढ़ने का रास्ता दिखाया. जैसे-जैसे फगनी जीवन कौशल सत्रों में भाग लेने लगी वैसे-वैसे उसका आत्मविश्वास बढ़ने लगा और धीरे-धीरे वह छात्रावास के नए जीवन को समझने लगी. जीवन कौशल के सत्रों से उसने नए वातावरण के अनुसार ढलना, स्वयं से प्यार करना, अपनी बात दृढ़ता से कहना,भावनाओं को समझना और व्यक्त करना सीखा. अपनी सबसे बड़ी कमजोरी पर काम करना शुरू किया और वो था उसका डर.अपने डर को दूर करने के लिए उसने सहपाठियों से दोस्ती की,छात्रावास की बालिकाओं से बातचीत शुरू की धीरे-धीरे वह सभी के साथ मिल-जुल कर रहने लगी और अपनी भावनाओं को अपने दोस्तों के समक्ष रखने लगी, दोस्तों के साथ खेलने लगी, शिक्षिका के सामने अपनी बात रखने लगी. अधीक्षिका ने फगनी के आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए प्रार्थना सभा का नेतृत्व करने का अवसर दिया. उसकी रूचि पढ़ाई में बढ़ने लगी. फगनी ने विद्यालय स्तर पर कबड्डी प्रतियोगिता में भी हिस्सा लिया और ब्लाॅक स्तर पर मैराथन प्रतियोगिता में हिस्सा लिया. अब फगनी को हार-जीत का डर नही है. उसने यह समझ लिया है कि डरने से कुछ हासिल नहीं होता हमें हर परिस्थिति का सामना हिम्मत से करना चाहिए. अभी फगनी कक्षा 8 वीं में है और पहले से अधिक आत्मविश्वासी है. वह कहती है कि - “अब मुझे छात्रावास में बहुत अच्छा लगता है. मैंने सभी से दोस्ती कर ली है और अपनी सहेलियों के साथ खेलती

हूँ, होमवर्क करती हूँ, मदद करती हूँ. पहले मुझे छात्रावास में बहुत डर लगता था लेकिन अब मैं सारी बातें अपनी मैडम को भी बताती हूँ."

अधीक्षिका लक्ष्मी वेक्को मरकाम जी का कहना है कि- "फगनी अब सबसे बातें करने लगी है शिक्षकों के पास जाकर भी अपनी बात रखती है सभी बच्चों से घुल मिलकर रहती है जीवन कौशल और स्कूल की गतिविधियों में भाग लेने लगी है.अब फगनी पढ़ाई में भी पहले से बेहतर प्रदर्शन कर रही है. वह पहले से ज्यादा खुश दिखती है.

फगनी बड़ी होकर पूलिस बनना चाहती है ताकि अपने गाँव के लिए कुछ अच्छा कर सके."

नदियाँ

रचनाकार- सपना यदु

कल -कल छल- छल बहती नदियाँ.
मधुर गीत सुनाती नदियाँ..

बच्चे इसमें खूब नहाए.
क्या बूढ़े और क्या जवान..

तेरे ही इस शीतल जल से.
खेती करते हैं किसान..

तू है पावन और तू सदा पवित्र कहाए.
कार्तिक मास में प्रातः काल, दीपक तुझमें लोग बहाए..

गंगा, यमुना, सरस्वती तेरे हैं अनेकों नाम.
तेरे जल में डुबकी लगाकर, तीर्थयात्री करें प्रणाम..

तेरा दृश्य है सुंदर और तू है सबको भाती.
बहते बहते तू अंत में सागर में जाकर मिल जाती..

सबसे ताकतवर

रचनाकार- श्वेता तिवारी

पहले कुत्ते पालतू नहीं होते थे. पर कुत्तों को जीने का यह तरीका पसंद नहीं आया. उन्हें भोजन की खोज में भटकना पड़ता था और शक्तिशाली जानवरों से डर कर रहना पड़ता था. कुत्ते ने सोचा कि इससे अच्छा यह होगा कि इस धरती के सबसे शक्तिशाली जीव को अपना मालिक बना लिया जाए. ऐसा सोचकर वह अपने मालिक की खोज में निकल पड़ा. रास्ते में उसे एक बड़ा और ताकतवर भेड़िया मिला. भेड़िये ने कुत्ते से पूछा तुम कहाँ जा रहे हो? कुत्ते ने कहा- मैं अपने लिए एक मालिक ढूँढने जा रहा हूँ. क्या आप मेरे मालिक बनेंगे? भेडिया तैयार हो गया. दोनों आगे बढ़े थोड़ी दूर चलने पर भेड़िए ने कुत्ते से कहा चलो भागो यहाँ से. कुत्ते को आश्चर्य हुआ उसने पूछा क्या हुआ, आप किस चीज से डर गए? भेडिया बोला देख नहीं रहे, सामने से भालू आ रहा है,वह हम दोनों को मारकर खा सकता है. कुत्ता समझ गया कि भेड़िए से अधिक बलवान भालू है.

उसने भालू का सेवक बनने का निर्णय किया. भालू के पास जाकर बोला क्या आप मेरा मालिक बनना स्वीकार करेंगे. भालू तैयार हो गया. भालू ने कहा चलो एक हिरण ढूँढते हैं, मैं उसे मारूँगा और फिर हम दोनों भोजन करेंगे. दोनों हिरण ढूँढने चले. थोड़ी दूर चलने पर उन्हें हिरणों का झुंड दिखाई दिया. जब वे उनकी ओर बढ़ने लगे तो उन्होंने देखा कि हिरण अचानक इधर-उधर भागने लगे. भालू भी भागने लगा. कुत्ते ने भालू से पूछा आप क्यों भाग आए? भालू ने जवाब दिया वहाँ मैंने शेर को देखा था, उसी के डर से मैं भाग आया हूँ. कुत्ते ने भालू को नमस्कार किया और शेर के पास चला गया उसने शेर से कहा कि वह उसका मालिक बन जाए. शेर ने कुत्ते को अपना सेवक बना लिया. दोनों बहुत दिनों तक साथ-साथ रहे. कुत्ते को अब लगने लगा कि उसका मालिक धरती पर सबसे शक्तिशाली है. एक दिन दोनों जंगल में

घूम रहे थे. अचानक शेर रुका और पीछे मुड़कर तेजी से भागने लगा. कुत्ते ने आश्चर्य से पूछा, क्या बात है मालिक? शेर ने जवाब दिया मुझे सामने से एक आदमी की गंध आ रही है. आदमी हमें जाल में फँसा सकता है. भलाई इसी में है कि यहाँ से भाग लिया जाए. कुत्ते ने कहा फिर तो मैं आपको भी नमस्कार करूँगा. मुझे धरती के सबसे ताकतवर जीव का सेवक बनना है. फिर कुत्ता आदमी के पास चला गया. उसका विश्वासपात्र बनकर रहने लगा. यह सिलसिला आज तक चल रहा है. कुत्ते ने फिर किसी और को अपना मालिक बनाने के बारे में सोचा भी नहीं. तब से इंसान ही कुत्ते का मालिक है.

कोहिनूर की आभा (महात्मा गाँधी)

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

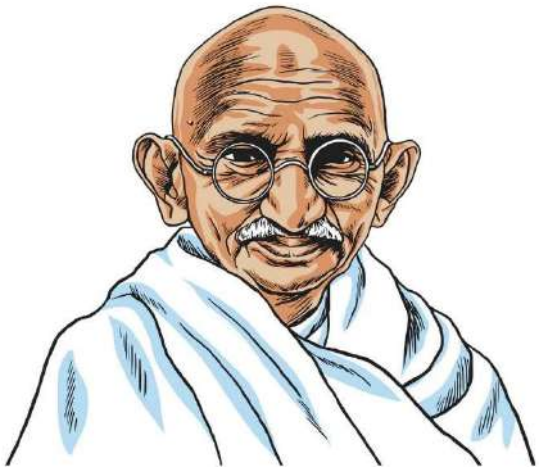

सत्य धरम की राह पर, चलकर हुए महान.
भारत आज स्वतंत्र है, पा जिनका अवदान..

परम अहिंसा धर्म का, बनकर नित ही भक्त.
राग द्वेष छल दंभ का, बने नही आशक्त..

जीवन में पहने सदा, खादी का परिधान.
मान स्वदेशी को दिया, रच दी परम विधान..

जीवन भर करते रहे, अपनों पर उपकार.
परिस्थिति जो भी मिली, नहीं मनाया हार..

जिनकी पावन सोच थी, स्वच्छ रहे परिवेश.
कोहिनूर सुरभित हुआ, राष्ट्रपिता से देश..

नटखट नन्ही

1. टीचर: नन्ही, वो कौन सा पक्षी है जिसके पंख तो होते हैं पर वह उड़ नहीं सकता?
   नन्ही: सर,मरा हुआ पक्षी.

2. टीचर(नन्ही से) :नन्ही बताओ,कुतुबमीनार कहाँ है?
   नन्ही- मुझे नहीं पता सर.
   टीचर:: जाओ जाकर बेंच पर खड़ी हो जाओ.
   नन्ही: (बेंच पर खड़े होकर) सर,यहाँ से भी कुतुबमीनार नहीं दिख रही है.

3. माँ: नन्ही, तुम्हारी परीक्षा कैसी रही? मुश्किल प्रश्न आए थे क्या?
   नन्ही: नहीं माँ,प्रश्न तो आसान थे; लेकिन उनके उत्तर मुश्किल थे.

4. नन्ही: मुझे प्रिण्टर के लिए पेपर चाहिए.
   दुकानदार : A4?
   नन्ही : A फॉर एपल, अब जल्दी से पेपर दे दो.

5. मेहमान: और बताओ नन्ही, आगे का क्या सोचा है?
   नन्ही: बस अंकल; आपके जाते ही ये बचे हुए बिस्किट खाऊँगी.

अफ्रिका में कुली बैरिस्टर गांधी

रचनाकार- रजनी शर्मा

कोरोना काल में जहाँ एक ओर स्कूलों में शैक्षणिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन सुचारू रूप से नहीं हो पा रहा है, वहीं मायाराम सुरजन शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चौबे कालोनी रायपुर की छात्राओं द्वारा गाँधीजी की जयंती के अवसर पर श्रीमती रजनी शर्मा द्वारा लिखित एवं निर्देशित लघु नाटिका "अफ्रीका में कुली बैरिस्टर गाँधी" का मंचन सीमित संसाधनों का उपयोग कर किया जा रहा है.

इस नाटक के मंचन में चुनौतियाँ बहुत थीं. सबसे पहले नाटक के लिए ऑडियो रिकार्ड किया गया, पार्श्व ध्वनियाँ डाली गईं. संवादों के उतार चढ़ाव को समझाने हेतु संवाद उदाहरण के लिए रिकार्ड किया गया. ऑनलाइन माध्यम से बच्चों को अभिनय के लिए प्रोत्साहित करना बहुत ही दुरुह कार्य था. अब इसके बाद समस्या थी मंच की, तो घर की छत को मंच और दीवार को नाट्य पटल बनाया गया. पुरानी साईकिल के चक्के को चरखा बनाया गया.

आसपास के पालक, बच्चों के सामने इसका अभ्यास वर्ग प्रदर्शन किया गया. इसमें गायत्री, भुवनेश्वरी सम्मिलित हुईं. ऑडियो दवारा सुदूर बस्तर के तेतरखूटी की छात्राओं और जबलपुर के बच्चों ने भी इस ऑडियो को सुना और मंचन के लिए प्रोत्साहित हुए. इस नाटिका में कुली शब्द के खिलाफ बैरिस्टर गाँधीजी के लंबे संघर्ष की बानगी है

मनु बंदर

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

स्कूल पहुँचा मनु बंदर,
खोल कर स्कूल गेट.
भालू सर ने पूछा,
आज फिर कैसे लेट?
मनु बंदर ने दिया जवाब,
मैं आ रहा था स्कूल.
अचानक मुझे याद आया,
लंच बाॅक्स गया भूल.
भालू ने मुस्करा कर,
फिर पूछा एक बार.
अपने लंच में तू,
क्या लाया इस बार.
मनु हँसकर बोला,
सर उठा कर थोड़ा.
सर जी! मैं लाया आज,
गरम-गरम पकौड़ा.

बापू की सीख

रचनाकार- नीरज त्यागी `राज`

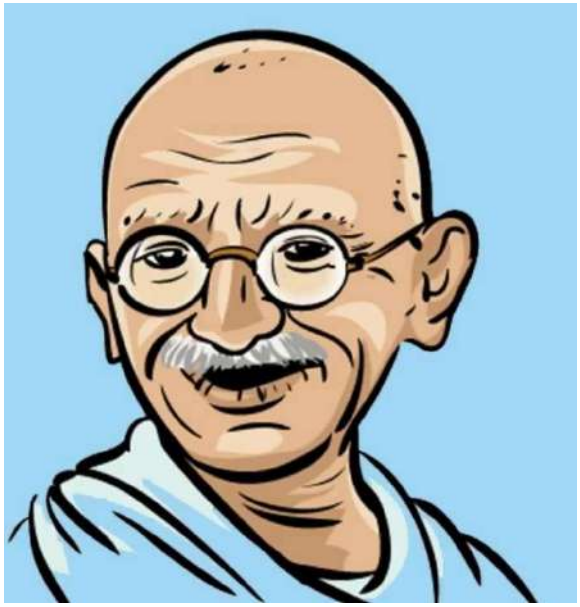

राजू नवीं कक्षा का छात्र है और घर के पास ही एक सरकारी स्कूल में पढ़ता है. राजू पढ़ने में बहुत अच्छा है लेकिन पता नहीं गणित के अध्यापक के सामने उसे क्या हो जाता है. वह लगातार अपने गणित के अध्यापक से डाँट खाता रहता है और कक्षा से बाहर किया जाता रहता है. अपनी समझ से तो वह सभी सवालों का सही जवाब देता है. लेकिन ना जाने क्यों गणित के अध्यापक उसे डाँटते ही रहते हैं और कक्षा से बाहर निकालते रहते हैं.

गाजियाबाद के सरकारी स्कूल मैं पढ़ रहा राजू बड़ी मेहनत से अपनी पढ़ाई कर रहा था. क्योंकि उसे पता था कि वह अपना भविष्य पढ़कर ही सुधार सकता है. 2 अक्टूबर यानी महात्मा गाँधीजी का जन्मदिन आने वाला था. आज राजू कुछ ज्यादा ही परेशान था. रात को परेशान राजू ने महात्मा गांधी जी की तस्वीर के सामने हाथ जोड़े और प्रार्थना की, बापू मुझे गणित के अध्यापक की डाँट से बचा लो. उसके बाद वो सो गया.

राजू को अभी नींद आयी ही थी कि उसने सपने में देखा, तस्वीर से निकलकर बापू,राजू के सामने खड़े हो गए. उन्होंने राजू से पूछा कि गणित के अध्यापक उसी को इतना क्यों डाँटते हैं?राजू ने बताया कि वह सवालों का सही जवाब देता है फिर भी गणित के अध्यापक सबके सामने उसका मजाक उड़ाकर कक्षा से निकाल देते हैं और सभी छात्र भी उसका मजाक उड़ाते हैं. तब गाँधीजी बोले बेटा, कल से तुम जब अपने अध्यापक के पास जाओ,तो अपनी गणित की कॉपी उन्हें देकर खुद ही मुस्कुराते हुए कक्षा के बाहर आकर खड़े हो जाना और उनसे

कहना, कि आप तो मुझे कुछ देर बाद निकाल ही देंगे. उम्मीद है कि इससे तुम्हारी समस्या का समाधान हो जाएगा.

राजू को ये उपाय अच्छा लगा. अगले दिन जब कक्षा में गणित के अध्यापक आए तो उसने उनसे हाथ जोड़कर नमस्ते की और कहा सर थोड़ी देर बाद तो आप मुझे डाँटकर कक्षा से निकालने वाले हैं.

मैं खुद ही कक्षा से बाहर जाकर खड़ा हो जाता हूँ और वह कक्षा से बाहर जाकर खड़ा हो गया. यही घटनाक्रम लगातार पाँच दिनों तक चलता रहा लेकिन इसका गणित के अध्यापक पर कोई असर नहीं पड़ा. बल्कि वह हँसते हुए उसके सामने से रोज निकल जाते.

कल 2 अक्टूबर है. उसने एक बार फिर बापू से पूछा,बापू-अध्यापक पर तो कोई असर नहीं हो रहा है. मैं क्या करूँ,तब बापू ने कहा बेटा कल तुम मेरी फोटो लेकर जाना और यही काम दोहराना. उन्हें गणित की कॉपी के साथ मेरी तस्वीर भी दे देना. अगले दिन राजू ने गणित के अध्यापक को हाथ जोड़कर नमस्ते किया, बापू की तस्वीर उनको दे दी और कक्षा से बाहर आकर खड़ा हो गया.

आज गणित के अध्यापक ने राजू को 500 रुपये के दो नोट दिखाये. जिन पर महात्मा गांधी का फोटो छपा था. उन्होंने राजू से कहा कि कक्षा के सभी विद्यार्थी मुझसे ट्यूशन लेते हैं. एक तुम ही हो,जो मुझसे ट्यूशन नहीं पढ़ते. बापू की बातें तो आज भी सारी सही हैं लेकिन आजकल फोटो वाले गाँधीजी से ज्यादा महत्वपूर्ण नोटों वाले गाँधीजी हैं.

राजू शाम को फिर तस्वीर के सामने हाथ जोड़कर बापू से बोला,अब मैं समझ गया हूँ कि मुझे आगे क्या करना है.

बापू ने सारी घटना सुनकर सोचा कि उनकी बातों को और उन्हें लोगो ने इसीलिए नही भुलाया,क्योंकि उनकी तस्वीर एक ऐसे कागज पर मौजूद है. जिसकी जरूरत बार-बार पड़ती है वरना लोग शायद उन्हें कब का भूल जाते. बापू भारी मन से वापस तस्वीर में चले गए.

नई इबारत लिख जाना

रचनाकार- रजनी शर्मा

कल थामा था जहाँ हमारा हाथ,
माउस, कीबोर्ड के संग हो लेना.
मॉनिटर में चमकते अक्षरों के साथ,
आँखों की स्लेट में सपने लिख लेना.
बदलते वक़्त की अब मानकर बात,
नवप्रयास की अगुआई तुम ही कर लेना.
जब कभी शिखरों पर जब हो तुम्हारी चढ़ान,
नींव के पत्थरों को भी याद जरा कर लेना.
मन आकुल, व्याकुल होकर जब जाये थक,
दे आवाज़ सधिकार हमें पुकार ही लेना.
साहस के बस्ते में ज्ञान के साथ,
भविष्य की नई इबारत लिख जाना.

दीपावली मनाने की परंपरा

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

यह त्रेतायुग की बात है. सरयु नदी के किनारे अयोध्या नामक राज्य था,दशरथ वहाँ के राजा थे. महाराज दशरथ बड़े प्रतापी व वीर राजा थे. उनकी तीन रानियाँ थी. बड़ी रानी का नाम कौशल्या, मँझली का नाम कैकेयी और सबसे छोटी रानी थी सुमित्रा. तीनों रानियों की कोई संतान नहीं थी. इससे राजा दुखी थे. प्रजा भी अपने राज्य के भविष्य को लेकर चिंतित थी. महाराज दशरथ को अपने बुढ़ापे में संतान होने की कोई उम्मीद नहीं थी. फिर भी उन्होंने ऋषि-मुनियों की सलाह पर संतान प्राप्ति के लिए यज्ञ करवाया. यज्ञ के हवन कुंड से अग्निदेव थाल में खीर लेकर प्रकट हुए. खीर देते हुए राजा से कहा कि इसे आप तीनों रानियों में बाँट दो. राजा की मनोकामना पूर्ण होने की बात कहकर अग्निदेव अदृश्य हो गए. अग्निदेव के कहे अनुसार महाराज दशरथ ने तीनों रानियों को खीर बाँट दी.

समय बीतने पर तीनों रानियाँ गर्भवती हुईं. कौशल्या से राम, कैकेयी से भरत का जन्म हुआ और सुमित्रा ने लक्ष्मण और शत्रुघ्न को जन्म दिया. पुत्रों के जन्म से रानियाँ और महाराज फूले नहीं समाए. राजकुमारों के जन्म के समाचार से प्रजा भी प्रसन्न हुई.

राजकुमारों की शिक्षा-दीक्षा शुरु हुई. राम विद्या व सभी कलाओं में पारंगत थे.

समय बीता, राजकुमार युवा हो गए. अब अयोध्या को उत्तराधिकारी की जरूरत थी. महाराज दशरथ ही नहीं,प्रजा भी चाहती थी कि युवराज राम ही अयोध्या के राजा बनें, परन्तु रानी कैकेयी को राम का राजा बनना पसंद नहीं था. वह अपने पुत्र भरत को अयोध्या के राजसिंहासन पर देखना चाहती थी. महारानी कैकेयी ने महाराज दशरथ को उनके दिए वरदान का स्मरण कराते हुए उनसे अपने दोनों वरदान, भरत को राजसिंहासन और राम को चौदह वर्ष का वनवास की माँग कर दी. राजा के बहुत समझाने पर भी रानी ने अपनी जिद नहीं छोड़ी. अंततः भरत

को राजसिंहासन और राम को चौदह वर्ष का वनवास हो गया. राम के साथ उनकी भार्या सीता व अनुज लक्ष्मण भी वन चले गए.

वनवास व्यतीत हो रहा था कि एक दिन राम-लक्ष्मण की अनुपस्थिति में पंचवटी से रावण ने सीता का हरण कर लिया. सीता का हरण हो जाने से दोनों भाइयों को बड़ा दुख हुआ. वे सीता को ढूँढ़ने निकल पड़े,वन में एक वीर वानर हनुमान से उनकी भेण्ट हुई. हनुमान ने राम-लक्ष्मण को किष्किंधा पर्वत पर ले जाकर कपिराज सुग्रीव से मित्रता कराई. राम से मिलकर सुग्रीव बहुत प्रसन्न हुए. फिर राम ने सुग्रीव को आप-बीती सुनाई. राम की दशा देखकर सुग्रीव को बड़ा दुख हुआ. सुग्रीव ने राम को ढाँढस बँधाया और सीता की खोज के लिए सहायता की बात कही. फिर वानरराज सुग्रीव की आज्ञा से पवनकुमार हनुमान सीता की खोज में निकल पड़े. पता चला कि लंका के राजा रावण ने सीता को अपनी अशोकवाटिका में रखा है. समझौते के लिए राम ने रावण से सीता को वापस करने की बात कही, रावण नहीं माने. आखिर युद्ध तय हो गया.

राम और रावण के बीच भयंकर युद्ध हुआ. यह युद्ध धर्म और अधर्म, सत्य और असत्य, न्याय और अन्याय के बीच का युद्ध था. पाप और अधर्म का प्रतीक रावण एक-एक करके सपरिवार काल कवलित हो गया. सत्य और धर्म के प्रतीक राम की जीत हुई. इस प्रकार लंकापति रावण की मृत्यु के साथ बुराई के साम्राज्य का अंत हुआ. फिर राम व सीता का मिलन हुआ. राम ने विभीषण को लंका का राज्य सौंपकर अयोध्या के लिए प्रस्थान किया.

राम के अयोध्या वापस आने पर अयोध्यानगरी को दुल्हन की तरह सजाया गया. अयोध्यावासियों ने अपनी प्रसन्ता व्यक्त करते हए अपने घरों में दीये जलाए. पूरी अयोध्यानगरी प्रकाशमय हो गई. उस दिन से लेकर आज तक पूरे भारतवर्ष में घरों में दीये जलाने की परम्परा चल पड़ी. इस परम्परा को जीवंत बनाये रखने के लिए हम प्रतिवर्ष दीपावली का त्योहार बड़े धूमधाम से मनाते हैं. प्रकाशपर्व दीपावली हमें मानवता का संदेश देता है.

छोटा-सा है मेरा परिवार

रचनाकार- दिलकेश मधुकर 'सूर्य'

छोटा - सा है मेरा परिवार,
जिसमें बसती खुशियाँ अपार.

मेरे दादा हैं जानकार,
कहते हैं कहानी हजार.

दादी मेरी भोली-भाली,
खीर खिलाती भर-भर थाली.

ज्ञानवान है पापा मेरे,
हरदम काम से रहते घिरे.

अम्मा की मैं करूँ गुणवान,
रोज बनाए नए पकवान.

बहना छोटी, बड़ी सयानी,
नृत्य कला की है दिवानी.

होकर बड़ कुछ काम करूँगा,
शिक्षक बनकर नाम करूँगा.

घोंदू और जंपी

रचनाकार- डॉ. मंजरी शुक्ला, पानीपत

"दिन भर उछल कूद करते रहते हो. थोड़ी देर शांत नहीं बैठ सकते." पीहू चिड़िया ने पानी से भीगे हुए पँख फड़फड़ाते हुए कहा.

जंपी मेंढक से पहले ही घोंदू मगरमच्छ बोला-"इसके उछलने कूदने से मैं परेशान हो चुका हूँ. कल तो मेरी आँख फूटने से बची थी."

जंपी सकपकाता हुआ बोला-"तुम तो सारे समय आँखें बंद करके मिट्टी में पड़े रहते हो, पता ही नहीं चलता कि..."

जंपी की बात पूरी होने से पहले ही घोंदू चिल्लाते हुए बोला-"चुप रहो, क्या तुम्हारे कूदने के कारण मैं आँखें खोलकर सोऊँ!"

तब बेकी बगुला बोला-"और ये जो धपधप धपधप करते हुए इधर- उधर कूदा करते हो ना इस कारण मछलियाँ भाग जाती है मेरी..."

जंपी सबकी डाँट सुनते हुए रुँआसा हो गया.

तभी पानी से सुनहरी मछली निकली और बोली-"जंपी, तुम जी भरकर कूदा करो,इस बेकी को खड़े रहने दिया करो दिनभर एक टाँग पर..."

जंपी ने सुनहरी की ओर देखा और वहाँ से उछलता हुआ चला गया.

अगले दिन नदी किनारे जंपी का कहीं अता-पता नहीं था. किसी को भी उसके नहीं होने का कोई दुःख नहीं हुआ.

बेकी,पीहू और घोंदू नदी किनारे बैठकर धूप सेंक रहे थे.

बेकी बोला-"मुझे लगता है कि जंपी जंगल छोड़कर ही चला गया."

घोंदू एक आँख खोलकर बोला-"अरे वाह, तब तो मज़ा आ गया. सारे समय मुझे अपने अंधे होने की चिंता लगी रहती थी."

"जंपी इस जंगल में लौटकर ही न आए तो बहुत अच्छा हो." पीहू आँखें मूंदते हुए बोली.

सभी खिलखिलाकर हँस पड़े.

दो दिन बाद जंगल में अफ़रा तफ़री मची हुई थी.

खोखो बन्दर ने शिकारी को जंगल में घूमते देखा था.

सभी पशु पक्षी बहुत डरे हुए थे और छुपने की जगह ढूँढ रहे थे.

दिन भर तो शिकारी का कहीं पता नहीं चला पर शाम होते ही वह नदी किनारे आकर बैठ गया.

बेकी और पीहू धूप सेंकने के बाद जा चुके थे पर घोंदू आँखें बंद किये हुए, मिट्टी में लिपटा हुआ आराम से लेटा हुआ था.

शिकारी बुदबुदाया-"कोई मगरमच्छ दिख नहीं रहा. एक मगरमच्छ भी मिल जाये तो उसकी खाल से अच्छे पैसे मिल जाएँगे."

यह सुनते ही घोंदू ने अपनी एक आँख खोली और सामने ही शिकारी को बैठे देखा.

डर के मारे घोंदू के हाथ पैर काँपने लगे. वह भाग कर नदी में भी नहीं जा सकता था, शिकारी उसे गोली मार देता.

उसने सोचा कि शिकारी के जाते ही वह नदी मैं चला जाएगा.

पर शिकारी भी अपनी पूरी तैयारी के साथ आया था. उसने कुछ सूखी लकड़ियाँ इकट्ठा करके आग जलाई,अपने बैग से कुछ बर्तन निकाले, फिर अपनी टोपी एक ओर रखकर बंदूक पकड़कर बैठ गया.

"अभी नदी का पानी अगर ऊपर आ गया तो मेरे ऊपर से मिट्टी हट जायेगी और फ़िर मैं नहीं बचूँगा." सोचते हुए घोंदू की आँखों से आँसूं बह निकले.

तभी घोंदू ने देखा कि शिकारी अचानक उछलकर खड़ा हो गया और जोर से चीखने लगा.

हड़बड़ाहट में उसके हाथ से बन्दूक गिर गई और घोंदू के पास ही आकर गिरी.

"अब मुझे इस दुनिया में कोई नहीं बचा सकता." घोंदू ने सोचा.

"मेरी टोपी उछलते हुए भाग रही है...हे भगवान मैं ये क्या देख रहा हूँ. शिकारी डर के मारे थर थर काँपते हुए बड़बड़ाया और फ़िर अचानक उसने भूत भूत चिल्लाते हुए दौड़ लगा दी. वह इतनी तेजी से भागा कि कुछ ही देर में आँखों से ओझल हो गया.

घोंदू आँखें फाड़े उछलती टोपी को देख रहा था.

तभी टोपी रुकी और उसमें से हँसता हुआ जंपी बाहर निकला और बोला-"दोस्तों बाहर आ जाओ. शिकारी भाग गया.

जंपी की आवाज़ सुनकर बर्तनों में से मेंढक बाहर निकल आये और हँसने लगे.

"चलो, अब वह शिकारी यहाँ कभी नहीं आएगा." कहते हुए जंपी जाने को हुआ.

तभी घोंदू रोते हुए बोला-"क्या अपने दोस्त को माफ़ नहीं करोगे जंपी?"

जंपी उछलता हुआ उसके पास आया और बोला-"मैं तुमसे नाराज़ थोड़े ही हूँ."

"तो मेरी पीठ पर कूदो." घोंदू अपने आँसूं पोंछते हुआ बोला

"अरे पर..." जंपी सकुचाता हुआ बोला

"कूदो, वरना मैं समझूँगा कि तुम मुझसे नाराज़ हो."

और थोड़ी देर बाद जंपी अपने दोस्तों के साथ घोंदू की पीठ पर कूद रहा था और घोंदू शिकारी के भागने की याद करते हुए हँसता जा रहा था.

इंतजार

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

नयन ताकती राह को, इंतजार हर बार.
कब आओगे साजना, बना रही हूँ हार..

सुई और धागा लिये, बैठी घर के द्वार.
बैठे बैठे बित गया, नही गयी उस पार..

हरे रंग साड़ी पहन, हुई आज तैयार.
जल्दी आओ साजना, करती तुमको प्यार..

चूनकर लाई बाग से, हुई भक्ति में लीन.
हाथो में गजरा लिये, बना रही पल छीन..

साजन आये द्वार पर, जागी मन में आस.
झूम खुशी से मन उठा, आये मेरे पास..

वसुधा है परिवार

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित मलय

हम एक नया संसार बनायें.
न ढलें अश्रु नयनों से, स्वप्न पलें.
सुख-दुख में शामिल, बन दीप जलें.
मानव-मन के सब कष्ट मिटाकर,
जीवन में हर पल हंसें-हंसायें.
हम एक नया संसार बनायें..

हर मानव को भोजन वस्त्र मिले.
काम हाथ को, मुख- मुस्कान खिले.
भेदभाव से ऊपर उठकर हम,
वंचित- शोषित को गले लगायें.
हम एक नया संसार बनायें..

जियें प्रकृति सह शुभ धरा बचायें.
गिरि, कानन, मरु, सागर, सरितायें.
वसुधा ही है परिवार हमारा,
ध्वज मानवता का हम फहरायें.
हम एक नया संसार बनायें.

माता बहादुर कलारिन

रचनाकार- नेमेन्द्र कुमार गजेन्द्र

महादेव के साधक सच्चा, शिव पुराण देवय परमान.
शिव पुराण इक पोथी पढ़के, जागे मन मा हावय ज्ञान..

कला प्रेम अउ शौर्यवीरता, हे कलार मा लेवव जान.
कला वार सैनिक के कर ले, हे कलार के उदभव मान..

हैहैवंशी जैन कलचुरी, जुड़े सबो ले हे कलवार.
बेंचत राहय भरके मदिरा, हाथ धरे वो लट्ठ कटार..

परिचय होगे कलावार के, बनगे कइसे जेन कलार.
मातु बहादुर बने कलारिन, होवय शोभित गर मा हार..

सुन लव संतों मोर बात ला, कथा सुनावँव मँय हर एक.
कलावती के बात करत हँव, वीर रहे जे नारी नेक..

कलावती बिन माँ बाबू के, होगे बेटी जगत महान.
मातु कथा नेमेन्द्र कहत हे, देवव सब माता ला मान..

अँचरा ले ममता के झरना, छलके झर झर चारों ओर.
माँ कलार के बनगे कइसे, बहादुरी के होवय सोर..

सरहरगढ़ इक गाँव जिहाँ के, सुबेलाल खोले व्यापार.
बड़का बाबू कलावती के, राहय छोटे साहूकार..

मंद बना के बेंचे सुग्घर, रोजगार साधन कहलाय.
छत्तीसगढ़ म चर्चा होवय, चारो मूड़ा नाम कमाय..

कलावती हर सुबेलाल के, सबो काम मा हाथ बटाय.
मंद बनाए बड़े सबेरे, साँझा बेरा हाट लगाय..

रूप रंग मा कलावती हर, सौहत लछमी लगे समान.
बरछी भाला हाथ धरे मा, रन चण्डी दुर्गा जस जान..

कोठी भरके आव भाव मा, राहय सुग्घर निक संस्कार.
कलावती राहय वो नारी, पाय समाज के अड़बड़ प्यार..

कलावती के सुंदरता हर, लगे मोहनी रूप समान.
ब्रम्ह देव हर ध्यान लगा के, करे रूप के हे निर्मान..

वो मृगनयनी जइसे सुन्दर, देखत लोगन भूले होश.
जान वीरता काँपय लोगन, हो जाए ठंडा सबके जोश..

अउ मृगनयनी ला पाए खातिर, राजा परजा रूप बनाय.
कलावती के सुनते जौहर, फेर सबो हर तो डरराय..

सरहरगड़ बीहड़ जंगल मा, राजा आखेटन बर आय.
रतनपुरी के राज कलचुरी, कलावती ला देख मुहाय..

रूप देख ले कलावती के, राजा हिरदे जाथे हार.
प्रेम बिहा बर कलावती सन, झप ले हो जाथे तैयार..

प्रेम बिहा के पबरित वेदी, सुख के मंगल बरसा लाय.
दिवस महीना साल गुजर थे, हाँसत गावत दिवस पहाय..

उही समय मा एक बेर जब, घर सुरता राजा ला आय.
राज काज के बना बहाना, राजा नारी ले संग छुड़ाय..

कलावती ला छोड़ छाड़ के, राज कलचुरी राजा जाय.
सरहड़गड़ के वो रद्दा मा, कभू दुबारा वो नइ आय..

कलावती के गर्भ भीतरी, इक बालक राहय मुस्काय..
नवे मास मा वो बालक हर, ये दुनिया मा जनम ल पाय..

कलावती हर अपन बाल के, छ्छानछाड़ू नाम धराय.
रूप रंग गुण लागय जइसे, सुरुज नरायन सौहे आय..

धीरे धीरे वो छ्छान हर, माँ ले शिक्षा दीक्षा पाय.
वीर बली तलवार असन वो, तेज गठीला तन ला धाय..

कलावती के सुन्दर बेटा, वो छछानछाड़ू हर आय.
वीर बहादुर राजनीति के, सुग्घर माँ शिक्षा पाय..

जब छ्छान के पिता नाम के, खिल्ली संगी रोज उड़ाय.
अपन पिता के बारे मा वो, रोज प्रश्न हे करते जाय..

अत्याचार सहे माँ कतका, देखत राहय बेटा रोज.
बदला के मन आगी सुलगे, ज्वाल भरे नित मन मा सोज..

जब किशोर के उम्र भरे तब, कलावती हर कथा बताय.
कोन पिता ये तोर बाल सुन, तय जग मा हस कइसे आय..

राजा के करनी ला सुनके, बालक रोष म सुलगे जाय.
राज वंश ले घिरना करके, बदला लेके उदिम लगाय..

धीरे धीरे वो बालक हर, खुद के सेना अपन बनाय..
राज वंश के नारी मन ला, धर धर के वो घर मा लाय..

राज कुमारी के गिनती ला, बना एक सौ सैंतालीस.
अत्याचार करे वो निसदिन, नारी लाज ल रोजे पीस..

बना ओखली रोज धान ला, राजकुमारी ले कुटवाय.
डूब वासना के आगी मा, सबके असमद लूटत जाय..

निरपराध नारी ला देखत, कलावती हर रोवय जाय.
झन कर अत्याचार कही के, बेटा ला वो हर समझाय..

बेटा के करनी ला देखत, कलावती हर सोंचे रोज.
नारी के सनमान बड़े हे, मानत नइ हे बेटा सोज..

मातु बात नइ माने बेटा, पाप घड़ा ला भरते जाय.
निर्णय लेके तब तो माँ हर, मन ला अपने वो समझाय..

सरहरगड़ मा एक रोज जब, रहे धूर के निक त्यौहार.
मंद नशा मा प्यास मरे जब, अउ छ्छान के टपके लार..

घर छ्छान हर आके बोलय, पानी देदे माँ तै आज.
प्यास लगे हे बड़े जोर के, बिगड़े जइसे लागय काज..

कलावती हर सोच समझ के, नइ राखे नौकर ला आज.
टोंटा सूखत हे छ्छान के, खाली हड़िया बिन पानी साज..

तब छ्छान ला कलावती हर, तीर बावली ले के जाय.
पानी ले बर बेटा नवथे, तइसे धक्का माँतु लगाय..

बुड़के मरगे जब छ्छान हर, माँ हर दुख मा कलपत जाय.
अउ नारी सनमान बड़े हे, सोंचत नारी सबो छुड़ाय.

अपन सूत ला अपन हाथ ले, मारे माँ बड़ मुस्कुल आय.
तब ले नारी कलावती हर, धरम नाम बर कदम उठाय..

बहादुरी ला देखत माँ के, नाम कलारिन वीर धराय..
बने बहादुर मातु कलारिन, सरी जगत मा नाम ल पाय..

कलावती माँ रहे कलारिन, पूजत जेला सबो कलार..
छत्तीसगढ़ मा अमर नाम हे, कलावार के बल हे सार..

जय हो जय माँ कलावती की, जय छ्छानछाड़ू के होय.
जे माँ के बदला ले खातिर, झेल पाप ला खुद गे सोय..

सुरुज रहत ले तीन लोक माँ, होही माँ के जय जयकार.
जय कलार के मातु कलारिन, बहादुरी तोरे जग सार..

पटाखों की दीवाली

रचनाकार- डॉ. मंजरी शुक्ला, पानीपत

पटाखों की दुकान में ढेर सारे पटाखे सजे हुए रखे थे. पटाखे कुछ उदास थे. पटाखों को यह देखकर दुःख होता था कि जब अच्छे कपड़े पहने बच्चेअपने मम्मी पापा के साथ पटाखे लेने आते तो दुकानदार बड़े प्यार से उन्हें पटाखे दिखाता लेकिन जो बच्चे नंगे पैर और पुराने कपड़े पहनकर पटाखों को केवल दूर से ही देखने आते उन्हें दुकान के पास खड़ा भी नहीं होने देता.

पटाखों को दुकानदार पर गुस्सा तो बहुत आ रहा था, पर वे क्या कर सकते थे. दीवाली के दिन, दुकानदार की दोपहर के समय आँख लग गई. पटाखों ने मौका देखकर आपस में तय किया कि हमें यहाँ से चले जाना चाहिए. पर वे जाएँ कैसे ? तभी पास की टोकरी,जो बहुत देर से उनकी बाते सुन रही थी, बोली -"तुम सब मेरे ऊपर बैठ जाओ, मैं तुम लोगो को यहाँ से ले चलती हूँ."

यह सुनकर सभी पटाखे ख़ुशी से उछल पड़े. टोकरी में बैठते ही वे हवा से बाते करने लगे. तभी उन्हें कुछ बच्चे दिखाई दिए जो उदास और गुमसुम अपनी झोपड़ियो के बाहर बैठे थे.

"देखो, वे बच्चे वहाँ बैठे हैं." चकरी बोली

"हाँ-हाँ, वे ही हैं." अनार ने हाँ में हाँ मिलाई.

हमारी सबसे ज्यादा जरूरत यहीं है. हमें यहीं उतार दो. फुलझड़ी ने कहा.

टोकरी भी खुश हो गई और तुरंत नीचे उतर पड़ी.

बच्चे इतने सारे पटाखे देखकर ख़ुशी से उछल पड़े. सबसे पहले उन्होंने चकरी की पूँछ मे आग लगाई. चकरी इठलाती, मटकती हुई गोल गोल थिरकने लगी. बच्चे नाचने लगे. फिर आई साँप

की बारी, काली-काली छोटी टिक्कियो को आग लगते ही कई विशाल नाग फन काढ़कर खड़े हो गए.

छोटे बच्चो ने डर के मारे अपनी आँखे बंद कर ली और बड़े बच्चे ठहाका लगाकर हँसने लगे.

यह सब देखकर भी अनार कहाँ पीछे रहने वाला था. वह भी आगे आ गया.

जब बच्चों ने अनार जलाया तो उसमें से हजारों रंग बिरंगे सिक्के गिरने लगे. बच्चों के चेहरे ख़ुशी से दमकने लगे. देखते ही देखते फुलझड़ी,मेहताब और आतिशबाजियो के सतरंगी रंग आसमान में बिखर गए और वहाँ पर कागज के टुकड़े बिखर गए.

टोकरी की आँखें अपने दोस्तों से बिछुड़ने के गम मे नम हो गई पर फिर ख़ुशी से उछलते कूदते बच्चों को देखकर उसके चेहरे पर भी मुस्कान आ गई और वह हँसते हुए वापस उड़ चली अपनी दुकान की ओर.

रक्तदान

रचनाकार- वीरेन्द्र कुमार साहू

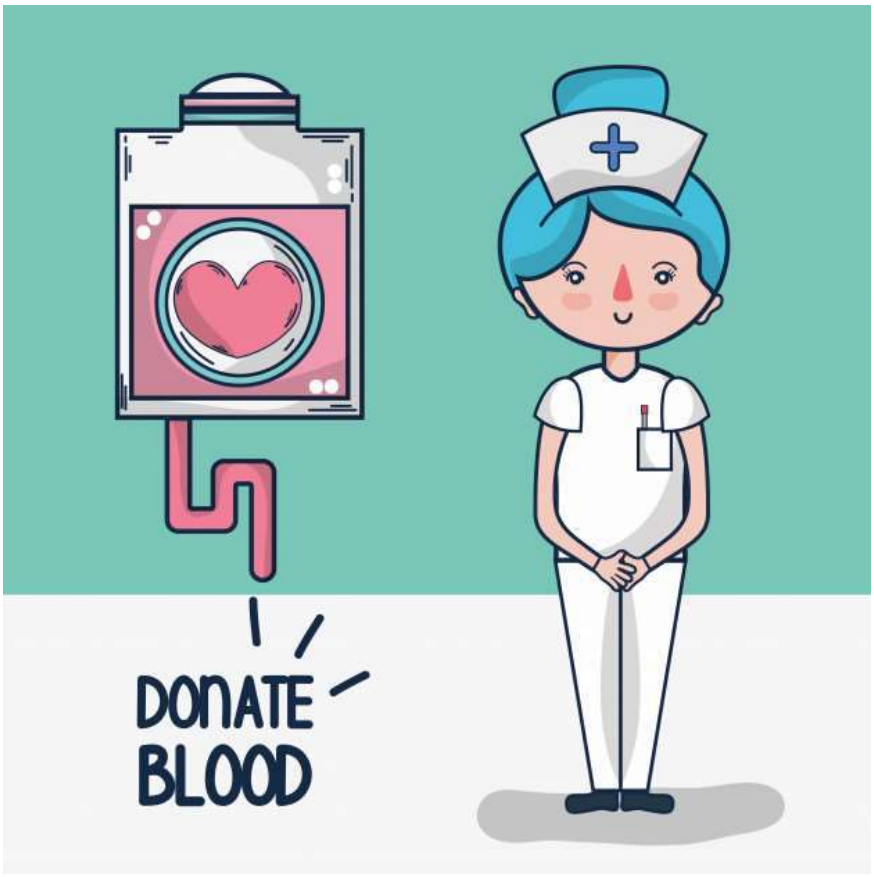

हर जीवन को जरूरी है शरीर में रक्त हो
मानवता को जरूरी है मन में भाव हो

जो करता भला जीवन के कर्मो को
सवारता वह अपने कई जन्मो को
दान ही जीवन का सर्वोत्तम गुण है
रक्तदान कर बचा सकता जीवन को.

रक्तदान ही होता महादान है
रक्त से दूसरों की बचती जान है
बहुत बड़ा पुण्य का यह काम है
करना अवश्य चाहिए रक्त का दान है..

1 अक्टूबर को यह दिवस मनाया जाता
स्वस्थ करें दान यह समझाया जाता
करके दान किसी का भला कीजिए
दुआएँ पाइए जीवन सफल कीजिए..

दीप जलाना दीवाली में

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

दीप जलाना दीवाली में,
ख़ुशी मनाना दीवाली में.

नए नए परिधान पहन के,
तुम इठलाना दीवाली में.

रॉकेट चकरी फुलझड़ी से,
घर दमकाना दीवाली में.

धूम मचाते दीप पर्व का,
गीत सुनाना दीवाली में.

मिष्ठानों से थाल सजा के,
मीत बुलाना दीवाली में.

ख़ुशी ख़ुशी त्यौहार मना के,
प्रीत बढ़ाना दीवाली में.

पढ़ई के मतलब परीछा नो हे

रचनाकार- सुवर्णा साहू

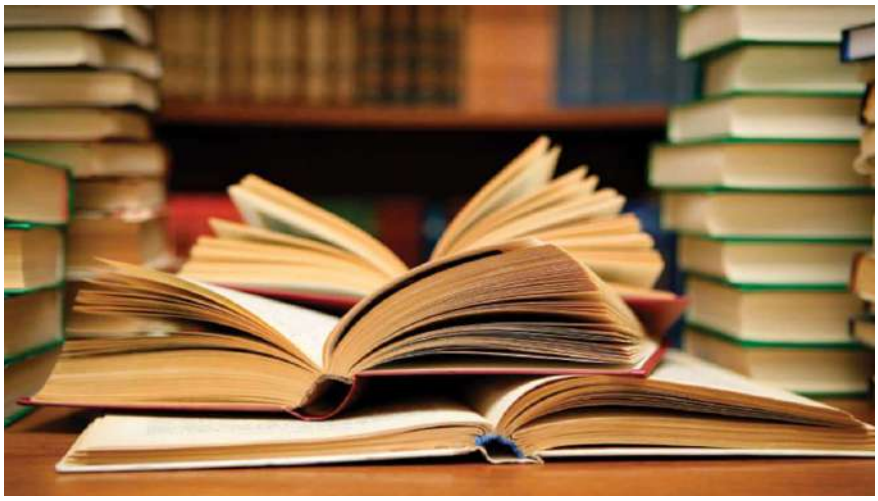

जब ले ए करोना ह पांव पसारे हे, तब ले हर आदमी हलाकान हो गे हे. काम-धंधा, आय के साधन नँदागे, समान नइ मिले, अउ तबियत के हाल ला पूछ मत. हर मनखे ह परेसान अउ डर्राए हावे, फेर एक ठन टीम अइसे हे जेन ह अब्बड़ खुस हे. इस्कूल नइ खुलत हे त ऊंकर बर चांदी-चांदी हो गे हे. पढ़ई लिखई के जंजाल छूटिस, मनमाने घूमत हें अउ खेलत हें. बिंदास कहिथें कि पर साल बिना परीछा दे फोकट मा पास हो गेन अउ एहू साल पास होबो त काबर पढ़बो.

ए डेढ़ हुसियार लईका मन ह कई ठन बात ल न समझत हें. पहिली बात, तुमन ह फोकट मा पास नइ होए हो. साल भर छोटे-बड़े कई ठन परीछा देथो, उही मा पास होए हो, एके ठन अंतिम परीछा बाँच गे रीहिस. अउ इस्कूल नइ खुलत हे त तुँहर बचाव बर हरे. बाहिर ले अवइया सगा मन ला इस्कूल मा ठहराए रीहिस, ओमा कतको झन ला करोना निकल गे. हवा मा, इस्कूल भवन मा, समान मा वायरस हो सकत हे. तुमन ह इस्कूल मा तीर-तीर मा बइठथो, रिसेस मा दोस्त के घेंच मा बाँही डार के घूमथो, एकरे कारन इस्कूल ल नइ खुलत हें.

लेकिन इस्कूल बंद होए के मतलब पढ़ई बंद नइ हे. सरकार अउ सर-मेडम मन ह कतको उपाय जतन करत हें कि तुमन ह कुछ न कुछ पढ़त-सीखत रहव. ओमन फोन मा आॅनलाइन अउ बु

ब्लू-टू के सहारा पढ़ाथें, गाड़ी मा घूम घूम के तुँहर कर आथें, पारा-मोहल्ला मा आसपास के दीदी-भइया मन गियान बाँटत हें. फेर कतको लइका मन ह ए सब ले बचे के फेर मा रहिथें.

पूछबे त फोन नई हे, डाटा नई हे कथें, कभू दूसर दूसर पारा के नाँव गिना देथें अउ कोनो जगा नइ जावें.

सबले खास बात, जेन ला सब लइका मन ला समझना जरूरी हे, पढ़ई के मापन के अधार 'परीछा' नइ हे, ग्यान हरे. तुमन का जानथो-समझथो', ए हरे. कतको लइका मन ला परीछा मा अब्बड़ नंबर मिलथे फेर अचानक काहीं पूछ देबे त नइ बता सकें, समस्या आथे त मुंड़ धर लेथे अउ दूसर ले मदद खोजथें, त अइसे नंबर के का फाइदा. कई झन ला परीछा मा ठीक-ठाक नंबर मिलथे लेकिन हर बात ला सोंच बिचार के गोठियाथें, बिस्वास के साथ समस्या के हल सोंच सकथें, ओकर गियान जादा सारथक हे.

पढ़ई-लिखई के उदेस्य परीछा दे-दे के नंबर लानना नइ होए, जानकारी होना अउ समझ-बूझ बढ़ाना होथे. त तुमन पढ़ई ले मत भागो. कोनो कर भी कक्छा चलत होही, ऊँहा जाओ, कतको नवा बात सीखहू. माँ-पापा, परोसी दीदी-भइया ला पूछव, घर मा खुद पढ़व. अपन आप ला निखारे के मउका मत छोड़व. एमा तुँहर भलाई हे.

बापू के बन्दर

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

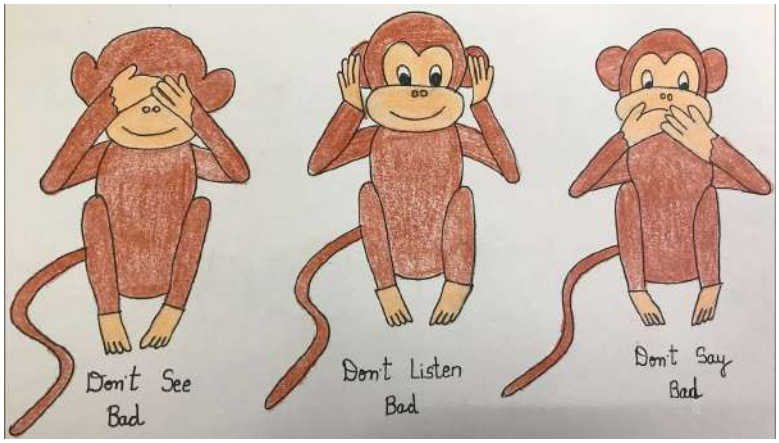

बापू बन्दर तीन, बहुत ही धूम मचाते.
उछले कूदे रोज, नाच को सभी नचाते..

बुरा न देखो आप, सदा सबको बतलाते.
कैसे बढ़े समाज, हमें वे राह दिखाते..

सुन लो बच्चों बात, झूठ तुम कभी न कहना.
बुरा कभी ना सोंच, सभी से मिलकर रहना..

बुरा न बोलो आप, सभी को यही सिखाते.
बापू बन्दर तीन, सदा ही राह दिखाते..

बुरा कभी ना बोल, हमेशा यही सिखाते.
मानो मिलकर बात, सभी को बात बताते..

बाढ़े अत्याचार, देश को कौन बचाये.
बेटी हुई निराश, कौन अब इसे मनाये..

बापू बन्दर मौन, रोज चलती अब आँधी.
बुरे यहाँ हालात, सिसक कर रोये गाँधी..

पढ़ई तुँहर द्वार हे

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित'

पढ़ई तुँहर द्वार हे, तुँहरे तीर-तार हे.
छोड़व संसो सुभहा, संगे म सरकार हे..

खेलत बीतय दिन झन, ठलहा बुलके छिन झन.
बीते मा पछतानी, पाछू बड़ परसानी..
अनपढ़ त अँधियार हे, पढ़ना ह उजियार हे.
पढ़ई तुँहर द्वार हे...तुँहरे तीर तार हे.

मोबाइल ल धरव जी, सुग्घर उदिम करव जी.
गुरुजी संग जुड़व अब, पढ़ई डहर मुड़व अब..
जुरमिल पढ़व घरे मा, सिरतों मजेदार हे....
पढ़ई तुँहर द्वार हे... तुँहरे तीर-तार हे.

कोरोना के बेरा, रहि के अपन डेरा.
बढ़िया माढ़े जोखा, काज 'अमित' अति चोखा..
मन के हार, हार हे, जीतव इही सार हे.
पढ़ई तुँहर द्वार हे, तुँहरे तीर तार हे.
छोड़व संसो सुभहा, संगे म सरकार हे...

अधरों पर मुस्कान खिली

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित मलय

उपवन की शोभा बढ़ती जब,
खिलते पाटल और लिली हैं.
स्नेह-भाव पाकर अपनों का,
अधरों पर मुस्कान खिली है.

प्रेम लुटाया करते हैं जो,
भेदभाव से ऊपर उठकर.
गिरि-शीश झुकाया करते वे,
जो बढते जाते गिर-गिरकर.

बाधाओं को मीत बना ले,
वह साधक है, बहुत बली है.
स्नेह-भाव पाकर अपनों का,
अधरों पर मुस्कान खिली है..

कल से सीख-समझ लेते हैं,
बीत गया जो न उस पर रोते.
वर्तमान में श्रम सीकर से,
स्वर्णिम कल के सपने बोते.

सदा सुवासित श्रम श्वेद से,
खलिहान, खेत, द्वार, गली है.
स्नेह भाव पाकर अपनों का,
अधरों पर मुस्कान खिली है..

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी

शेर की सीख

एक बार की बात है. जंगल के किनारे एक गाँव में रामू के घर पर जूली नामक बिल्ली एवं रोमी नामक चुहिया रहती थी. रामू के घर अक्सर मछलियाँ एवं दूध रहता ही था जिसे खाने-पीने रोमी चुहिया आया करती पर उसकी नजर जब जूली पर पड़ती तो वह डर जाती और अपने इरादे में कामयाब नहीं हो पाती थी. जिससे खाने पर पूरा अधिकार जूली का हो जाता. जूली अक्सर रोमी को परेशान करती थी. रामू यह देखकर मुस्कुराता रहता. एक दिन जूली से बचकर रोमी दूध पी गई जिससे जूली को बहुत गुस्सा आया और वह रोमी को दौड़ाने लगी. रोमी को कुछ सूझ नहीं रहा था कि वह भागे कहाँ? पर जान की बाजी लगी थी, उसे एक तरकीब सूझी कि क्यों न जंगल की तरफ भागा जाए ? वह तेजी से भागकर जंगल के राजा शेर के पास पहुँची और सीधे उसकी पीठ पर चढ़ गई. जब तक रोमी ने शेर को पूरा वाकया सुनाया तबतक वहाँ दौड़ते हुए जूली पहुँची पर शेर के आगे उसकी एक ना चली. शेर ने जूली को सीख दी कि कभी बड़े या ताकतवर होने का अभिमान न करना और किसी को दुर्बल या छोटा मत समझना. प्रकृति में सबका अपना-अपना स्थान है. एक दूसरे की सहायता करना, आपस में प्रेम से रहना, उत्तम व्यवहार करना सभी का कर्तव्य है. ताकत, सेवा के लिए है न कि दुर्बलों पर अत्याचार के लिए. इस सीख से जूली की आँखें खुल गईं और उसे अपने व्यवहार पर पछतावा हुआ. इस घटना के बाद जूली के व्यवहार में परिवर्तन हुआ और रोमी से दोस्ती हुई. दोनों वापस गाँव आए और मिलजुलकर रहने लगे.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

चूहा बना राजकुमार

एक जंगल का राज शेर था. जब भी उसे भूख लगती, वह जंगल में शिकार करके अपनी भूख मिटाता और फिर अपनी गुफा में आराम करता था. शेर की जिंदगी बड़े आराम से कट रही थी. एक दिन एक चूहा शेर की गुफा के पास बिल बनाकर रहने लगा. एक दिन शेर जब शिकार से वापस आकर अपनी गुफा में आराम कर रहा था तभी चूहे को शरारत सूझी और वह सोते हुए शेर के शरीर पर दौड़ने लगा. जब वह शेर की पूँछ पर दौड़ते हुए नीचे आया. शेर चौंककर उठा और गुस्से से दहाड़ते हुए, उसने चूहे को पकड़ लिया चूहा बहुत छटपटाया पर बचकर भाग न सका. चूहा बुरी तरह डर गया. तब चूहे ने शेर से कहा-"हे राजा मैं बहुत डर गया हूँ. आप इस बार मुझे माफ कर दीजिए, मैं आपका उपकार कभी नहीं भूलूँगा और शायद किसी दिन मैं आपकी कुछ मदद करूँगा."

चूहे द्वारा मदद की बात सुनकर शेर हँसते हुए कहने लगा-" तू इतना छोटा सा चूहा जंगल के राजा शेर की क्या मदद करेगा, जा तुझे माफ किया, मैं अभी भूखा भी नहीं हूं और न ही तुझे खा कर मेरा पेट भरेगा. "यह कहते हुए उसने चूहे को जाने दिया. चूहे ने राजा शेर को धन्यवाद दिया. शेर ने कहा तुम बहुत भाग्यशाली हो,जाओ अब मुझे कभी परेशान नहीं करना वरना मेरे हाथों से मारे जाओगे.

कुछ दिनों पश्चात शेर शिकार की तलाश में घूम रहा था तभी वह शिकारियों के फैलाए जाल में फँस गया. जाल में फँसे शेर ने जोर-जोर से दहाड़ लगाई और जाल से निकलने की कोशिश की लेकिन वह जाल से निकल नहीं पाया. चूहे सहित सभी जानवरों ने दहाड़ सुनी. चूहे ने सोचा कि राजा मुश्किल में है,मुझे उनकी मदद करनी चाहिए. यह सोच कर चूहा दौड़कर शेर के पास पहुँचा और कहा-घबराइए मत राजाजी,मैं शिकारियों के आने के पहले आपको जाल से मुक्त कराऊँगा. यह कहते हुए चूहे ने अपने तेज दाँतो से जाल काटकर जल्दी ही शेर को जाल से मुक्त कर दिया. शेर को अब पता चला कि छोटा सा चूहा भी बहुत मदद कर सकता है. शेर ने चूहे को धन्यवाद देते हुए कहा कि अब तुम खुशी से जंगल में रहो. तुमने राजा की जान बचाई है अब तुम इस जंगल के राजकुमार हो,राजकुमार... चूहे ने राजा को धन्यवाद दिया और वहाँ से जाने लगा. तभी शेर ने कहा आओ मैं तुम्हे अपनी पीठ पर बैठाकर जंगल की सैर कराता हूँ. चूहा बहुत खुश होकर और शेर की पीठ पर बैठ गया. राजा शेर की पीठ पर चूहे को बैठा देख बिल्ली शेर से कहने लगी-" राजा यह क्या हो रहा है? जंगल के राजा शेर पर छोटा सा चूहा सवारी कर रहा है. यह राजा को शोभा नहीं देता. " तब शेर ने कहा- यह छोटा है,तो क्या हुआ इसने जंगल के राजा शेर की जान बचाई है. इसे मैंने राजकुमार के पद पर प्रतिष्ठित किया है. जंगल के सभी जानवर इसका सम्मान करेंगे, जो भी इसे परेशान करेगा वह इस

जंगल में जिंदा नहीं रहेगा. राजा शेर की आज्ञा का पालन करते हुए जंगल के सभी जानवर चूहे को 'राजकुमार' का सम्मान देने लगे.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल**kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी वर्ग पहेली)

रचनाकार- दीपक कंवर (शिक्षक)

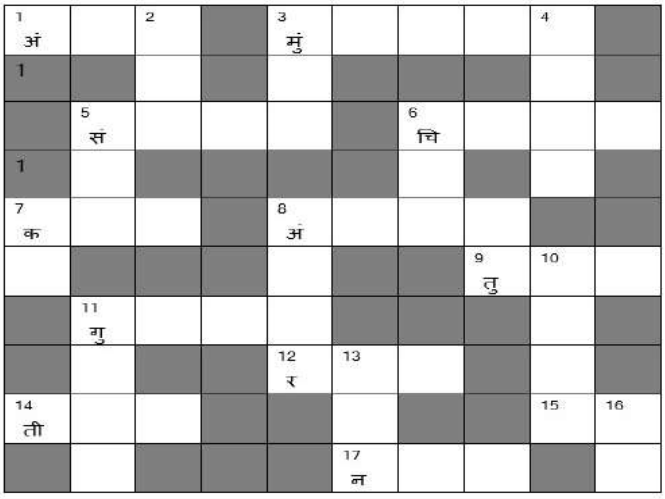

बाएँ से दाएँ:- 1. अंतरात्मा 4. मुंह जबानी 5. साथी, मित्र 6. सिक्का उछालना, टॉस करना 7. बांस का कोपल 8. कुर्ता, कमीज 2 तुम लोग 11. गौरैया 12. गिरवी (उर्दू) 14. तीतर 15. रुको, रहने दो 17. नाला

ऊपर से नीचे:- 2. दातौन 4. थप्पड़ 5. सांकल, कुंडी 6. बाण 7. कड़ुआ 8. अंधेरा 10. शराबी 11. मीठा 13. हम सभी 16. कहावत

पिछले अंक के भाखा जनऊला के उत्तर

1 चा	र	या	री				2 हा	व	य
क				3 ल	ट	4 प	ट		
5 र	व	6 नि	या			र			7 घे
		से				घौ		8 बा	री
	9 क	नी	हा		10 पो	नी			बे
11 झ	न			12 पं	थी		13 ख	खो	री
	घ		14 द	र्री		15 खा	र		
16 अ	उ		र		17 च		18 ख	ज	19 री
	20 आ	नं	द	च	उ	द	स		सा
			हा		र		21 हा	ल	य